नवम्बर-२०२४ ◆ वर्ष १३ ◆ अंक ०७ ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक
नवम्बर-२०२४

किसने गही तूलिका कर में,
अद्भुत सुन्दर चित्र बनाया।
क्या यह है मानव की रचना?
जो मन को इतना है भाया।
नहीं किसी मानव के बस का,
ऐसे दृश्य चित्र करना।
कार्य यही तो ईश्वर का है,
सृष्टि का सृजन करना।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹१५ १५७

भारत के सरताज

महाशय राजीव गुलाटी
चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा.) लि०

MDH मसाले

सेहत के रखवाले असली मसाले सच-सच

For More Information Visit us on :

mdhspicesofficial | mdhspicesofficial | mdhspicesofficial | SpicesMdh

www.mdhspices.com

SCAN FOR MDH ORIGINAL RECIPES

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमाँसक

डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री

डॉ.सोमदेव शास्त्री

डॉ. रघुवीर वेदालंकार

आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग (ग्राफिक्स डिजाईनर)

नवनीत आर्य (मो. 9314535379)

व्यवस्थापक

भँवर लाल गर्ग

सहयोग ◆	भारत	विदेश
संरक्षक	- 11000 रु.	$ 1250
आजीवन	- 1500 रु.	$ 300
पंचवर्षीय	- 600 रु.	$ 125
वार्षिक	- 150 रु.	$ 30
एक प्रति	- 15 रु.	$ 10

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच दिल्ली गेट, उदयपुर खाता संख्या : 310102010041518 IFSC CODE- UBIN 0531014 MICR CODE- 313026001 में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत् १९६०८५३१२५ कार्तिक शुक्ल षष्ठी विक्रम संवत् २०८१ दयानन्दाब्द २००

November - 2024

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)
कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन 5000 रु.
अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)
पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम) 3000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम) 2000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम) 1000 रु.

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

स मा चा र २९
०४ वेद सुधा
१३ क्या ईश्वर अपनी प्रशंसा चाहता है?
२० शेरे पंजाब
२१ सत्यार्थ मित्र बनें
ह ल च ल ३०
२२ प्रभु-मिलन का साधन : सन्ध्या
२५ लालच का जाल
२६ अनुपम औषधि-सिद्ध मकरध्वज
२८ कहानी दयानन्द की

स्वामी श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर | वर्ष - १३ | अंक - ०७ | द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर मुद्रण

प्रकाशक
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 4017298, 09314535379, 7976271159
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा निदेशक– मुकेश चौधरी, चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर–313001 से प्रकाशित, सम्पादक–अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

निरभिमान होकर जिज्ञासा कर

तमित्पृच्छन्ति न सिमो वि पृच्छति स्वेनेव धीरो मनसा यदग्रभीत्।
न मृष्यते प्रथमं नापरं वचोऽ स्य क्रत्वा सचते अप्रदृपितः।। - ऋग्वेद १/१४५/२

तम् इत्- उसको {से} ही, **पृच्छन्ति**- पूछते हैं, प्रश्न करते हैं, **सिमः न**- सब नहीं, **विपृच्छन्ति**- पूछते अथवा विरुद्ध प्रश्न या उल्टा प्रश्न नहीं पूछते। **धीरः**- {जिस} धीर ने, ध्यानी ने, **इव**- मानो, **स्वेन मनसा**- अपने मन से, **यत् अग्रभीत्**- जिसको ग्रहण कर लिया, **न प्रथमम्**- न पहली {और}, **न अपरं वचः**- न दूसरी बात, **मृष्यते**- मसली जाती है। **अस्य**- इस {ज्ञानी} के, **क्रत्वा**- ज्ञान से, कर्म से, **अप्रदृपितः**- निरभिमान, **सचते**- सम्बद्ध होता है।

व्याख्या

जिज्ञासु को चाहिए कि जब उसके मन में जिज्ञासा उत्पन्न हो, तो हरएक से न पूछता फिरे, वरन् ऐसे मनुष्य से पूछे; जिसने उस तत्त्व का साक्षात्कार किया हो। मन से मानो उसे ग्रहण कर (पकड़) रक्खा हो। किसी वस्तु को मन से तभी पकड़ा जा सकता है, जब उसका रहस्य हृदयंगम कर लिया गया हो। जिसने जिस तत्त्व का मनन नहीं किया, विचार नहीं किया, जिसको स्वयं उस पदार्थ का बोध नहीं, वह जिज्ञासु को क्या समझाएगा? वेद ने तभी तो कहा-

स्वेनेव धीरो मनसा यदग्रभीत्= स्वयं जिसने मननपूर्वक जिसको ग्रहण कर रक्खा है।

जब जिज्ञासु यथार्थ ज्ञानी गुरु को प्राप्त कर ले, तब उसे चाहिए कि अपनी मन की शंका सीधे और स्पष्ट स्वरूप में उसके आगे रख दे। इधर-उधर के व्यर्थ और उलटे प्रश्नों में अपना और गुरु का बहुमूल्य समय नष्ट न करे, अर्थात् जिज्ञासु गुरु के साथ जल्प या वितण्डा न करे। हार-जीत को सामने रखकर जो बातचीत की जाती है, शास्त्रकार उसे 'जल्प' कहते हैं। हार-जीत को सामने रखकर जो बातचीत की जाए और जिसमें नाम लेकर अपना मत या ज्ञान न बताया जाए, केवल दूसरे पक्षवाले का खण्डन ही किया जाए, उस बातचीत को 'वितण्डा' कहते हैं।

गुरु और शिष्य की बातचीत को शास्त्रकार 'वाद' का नाम देते हैं। किसी-किसी शास्त्र में 'वाद' या 'संवाद' भी कहा गया है और संवाद का अर्थ, 'शमाय वादः' 'समाय वादः', अर्थात् 'शान्तिप्राप्ति के लिए वाद 'या' 'समत्वप्राप्ति के लिए वाद' किया गया है। तात्पर्य यह कि प्रश्नोत्तर का उद्देश्य शान्ति-प्राप्ति होना चाहिए। जिज्ञासा के चित्त में विकलता=बैचैनी उत्पन्न होती है, उसको शान्त करना, बैचैनी दूर करना प्रश्न करने का लक्ष्य होना चाहिए। ऐसे जिज्ञासु की **'न मृष्यते प्रथमं नापरं वचः'**= न पहली और न दूसरी, अर्थात् न मुख्य और न गौण बात मसली जाती है, अर्थात् कृपालु गुरु अत्यन्त कृपा और धारणा से शिष्य की प्रत्येक बात का समाधान करता है। उसकी किसी बात का तीव्र प्रतिवाद करके उसका उत्साह भंग नहीं करता। **'न मृष्यते.... वचः'** का एक अर्थ ऐसा भी हो सकता है कि उस जिज्ञासु की 'न पहली और न दूसरी बात सही जाती है।' अर्थात् जो जिज्ञासु जिज्ञासु न बनकर जिगीषु=जीत का इच्छुक बनकर पूछता है, ज्ञानी गुरु उसकी किसी बात

को सहन नहीं करते, वरन् तीव्र खण्डन करके उसका मान-मर्दन कर देते हैं, उसके अहंकार को तोड़ देते हैं, अतः जब भी किसी आत्मनिष्ठ ब्रह्मवित् से जिज्ञासा करो, विनम्रता से, सुशीलता से तथा निरभिमानता से जिज्ञासा करो। इसी भाव को सम्मुख रखकर चौथे चरण में भगवान ने समझाया है-

'अस्य क्रत्वा सचते अप्रदृपितः'-

निरभिमान ही इसके ज्ञान-कर्म से युक्त होता है।

जो अभिमानी बनकर आया है, गुरु उसे क्यों कुछ बताने लगा। जो अभिमानशून्य होकर जिज्ञासा करता है, गुरु उसे अपना सारा ज्ञान और अनुष्ठान बता देता है। एक-एक रहस्य जिसे वह छिपाये बैठा है, उसे अधिकारी समझकर बता देता है। केवल बताता ही नहीं, वरन् करा देता है, जिससे क्रियात्मकरूप में करने से उसके सारे संशय नष्ट हो जाते हैं।

वेदादि शास्त्र जिज्ञासु के लिए निरभिमानिता पर बहुत बल देते हैं। निरुक्तकार महर्षि यास्क ने अपने निरुक्तशास्त्र (२/१/४) में पुराने किसी आप्त का वचन उद्धृत किया है। वह मानो इस मन्त्र के चौथे पाद की व्याख्या है। वह इस प्रकार है-

विद्या ह वै ब्राह्मणमाजगाम गोपाय मा शेवधिष्टेऽ हमस्मि।
असूयकायानृजवेऽ यताय न मा ब्रूया वीर्यवती तथा स्याम्।।
यमेव विद्याः शुचिमप्रमत्तं मेधाविनं ब्रह्मचर्योपपन्नम्।
यस्ते न द्रुह्येत् कतमच्चनाह तस्मै मा ब्रूया निधिपाय ब्रह्मन्।।

विद्या ब्राह्मण के पास आकर बोली- मेरी रक्षा कर, मै तेरी कल्याणकारिणी हूँ, तेरी निधि हूँ। ऐसे मनुष्य को मेरा उपदेश न करना, जो असूयक=ईर्ष्यालु हो, कुटिल हो, अजितेन्द्रिय हो, ताकि मैं बलवती बनी रहूँ। जिसको तू पवित्र, अप्रमादी, बुद्धिमान्, ब्रह्मचारी समझे और जो तेरी कभी निन्दा न करे, हे ब्रह्मवेत्तः! उसे मेरा उपदेश करना।

इसी से मिलते-जुलते वचन मनुस्मृति में मिलते हैं-

विद्या ब्राह्मणमेत्याह शेवधिस्तेऽस्मि रक्ष माम्। असूयकाय मां मा दास्तथा स्यां वीर्यवत्तमा।।
यमेव तु शुचिं विद्यान्नियतब्रह्मचारिणम्। तस्तै मां ब्रूही विप्राय निधिपायाप्रमादिने।। - मनु. २/११४-११५

विद्या ब्राह्मण के पास आकर बोली- मैं तेरी कल्याणकारिणी हूँ, मेरी रक्षा कर। निन्दक के प्रति मुझे न देना, ताकि मैं अत्यन्त बलवती हो सकूँ। जिसको तू पवित्र और नियमपूर्वक ब्रह्मचारी जाने, उस प्रमादरहित मेधावी ब्रह्मचारी के प्रति मेरा उपदेश कर।

तात्पर्य यह है कि विद्यारत्न, विशेषकर ब्रह्मविद्यारूपी महामूल्य रत्न उसको देना चाहिए, जो उसे सम्भाल सके। घमण्डी मनुष्य प्रमादी होता है, वह अमूल्य निधि को, बहुमूल्य कोष को नहीं सम्भाल सकता, अतः वह इसका अधिकारी नहीं है। प्रमादी मनुष्य तो ज्ञान, विशेषकर तत्वज्ञान को समझ ही नहीं पाता। जैसा कि यम ने नचिकेता को मार्मिक शब्दों में कहा है-

न साम्परायः प्रतिभाति बालं प्रमाद्यन्तं वित्तमोहेन मूढम्। (कठो.)

बालक, प्रमादी तथा धनमद से उन्मत हुए को यह साम्पराय=आना-जाना संसार-सार सूझता नहीं।

कर्त्तव्य के समय जो कार्य न कर दूसरे समय के लिए टाल देता है, वह प्रमादी है। गुरु देने को तैयार हैं, शिष्य प्रमाद का शिकार होकर सुनने या ग्रहण करने को तैयार नहीं है। ऐसे को उपदेश देना उस पर अत्याचार करना है। उसकी मनोभूमि उपदेश-बीज को धारण करने के अयोग्य, असमर्थ है, अर्थात् ऊसर है। उसमें बीज डालना, बीज को गँवाना है। इसी बात का विचारकर शास्त्रकारों ने अधिकारी और अनधिकारी की चर्चा की है।

स्वयं भगवान् ने जिज्ञासु में इन लक्षणों का होना आवश्यक बतलाया है। यथा-

आश्रृण्वते अदृपिताय मन्म नृचक्षसे सुमळीकाय वेधः।
देवाय शस्तिममृताय शंस ग्रावेव सोता मधुषुद्यमीळे।। - ऋग्वेद ४/३/३

हे बुद्धिमान्! मेघ के समान यज्ञ करनेवाला, मधुर पदार्थों का सृजन करनेवाला मैं जिसकी स्तुति करता हूँ, ऐसे पूरी तरह सुननेवाले, घमण्ड न करनेवाले, मनुष्यता को सफल करनेवाले, प्रसन्न करनेवाले, शान्त स्वभाववाले जिज्ञासु को ज्ञान तथा शिक्षा सिखा।

इस मन्त्र में भी जिज्ञासु के अदृपित होना=निरभिमानी होना आवश्यक बताया गया है।

सारांश यह है कि जिज्ञासु जहाँ गुरु की परख करे; गुरु में अपेक्षित गुणों के न होने पर उससे दूर रहना ही अच्छा है। वहाँ गुरु का कर्त्तव्य है कि वह भी शिष्य की भली-भाँति परीक्षा करे और देखे कि यह जिज्ञासु है या जिगीषु है, अर्थात् यह पढ़ने आया है या लड़ने आया है। दूसरा यह भी गुरु को देखना चाहिए कि किस प्रकार यह मनुष्य जिज्ञासु बनाया जा सकता है, जिससे उसका कल्याण हो।

इससे पूर्व छठे मन्त्र में गुरु के लक्षण बताये गये हैं। गुरु पहुँचा हुआ सिद्ध होना चाहिए, अर्थात् उपदेश करने योग्य तत्त्व का पारगामी ज्ञाता होना चाहिए। उसे उपदेश्य वस्तु के सम्बन्ध में जहाँ सामान्य ज्ञान हो, वहाँ विशेष ज्ञान होना भी अनिवार्य है, अर्थात् उसके सम्बन्ध में होने वाली सभी शंकाओं, संशयों को दूर करने में पूर्णतया समर्थ होना गुरु के लिए अत्यन्त आवश्यक है। इस सातवें मन्त्र में शिष्योचित् गुणों की चर्चा है। शिष्य का अदृपित (अभिमानरहित), विनीत होना अनिवार्य है। विनय के अभाव में वह शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकेगा। विनय के साथ शिष्य में सावधान होकर गुरुवचन को श्रवण करने तथा मनन करने की शक्ति भी होनी चाहिए, अर्थात् आलस्य तथा प्रमाद से रहित शिष्य ही विद्या का पात्र होता है। मनुष्यत्व सम्बन्धी परमज्ञान-आलस्य, प्रमाद, उच्छृखंलता एवं अविनय से प्राप्त नहीं किया जा सकता।

संकलन कर्त्ता एवं भाष्यकार- स्वामी वेदानन्दतीर्थ सरस्वती
सम्पादक- स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती
साभार- स्वाध्याय-सन्दीप

विश्व भर से आने वाले पर्यटकों के नवलखा महल, उदयपुर के बारे में विचार

यदि आप किसी भी भागदौड़ की जिन्दगी में जी रहे हैं, यदि आप उदयपुर के गुलाबबाग में स्थित नवलखा महल आते है तो आपको बहुत ही आनन्द का अनुभव होगा। इसलिए उदयपुर आने वाले हर व्यक्ति को गुलाबबाग स्थित नवलखा महल में अवश्य आना चाहिए। हम भी दो-तीन बार बाहर से ही फोटो खींचकर चले गये थे लेकिन आज हम इसमें पहुंचे तो हमारी आँखे ही खुल गई। सही में आपको भी यहाँ जो जानकारी प्राप्त होगी वो अन्य कहीं प्राप्त नहीं होगी।

Nice place to visit and to dive into the history and culture of our sacred Vedas. Quiet place and serene surrounding. Nice presentation of "The sacred 16 Sanskars."

आजीवन सत्यार्थ मित्र

सत्यार्थमित्र योजना में प्रतिवर्ष 5100 रुपए देने के क्रम में कुछ बन्धु प्रतिवर्ष रिन्यूअल कराने के झंझट से विरत रहना चाहते हैं, अतः न्यास ने अपनी पिछली बैठक में यह निश्चय किया है कि आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में जो भाई बहिन रु.51000 एकमुश्त जमा करा दें तो उनका यह सहयोग आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में मान्य होगा। समर्थ आर्यजन इस दिशा में सकारात्मक सहयोग करने का श्रम करें।

आत्म निवेदन

हाले लुइया

मैं मतान्तरण के पक्ष में हूँ। चौंकिए मत। मनुष्य एक विचारशील प्राणी है अतः मुझे यह अधिकार होना चाहिए कि मैं अपने मत का चयन कर सकूँ। इसीलिए हमारे संविधान में अपने मत के प्रचार की जो स्वतंत्रता दी गयी है मैं उससे सहमत हूँ। अगर किसी मत के सिद्धान्तों को समझ कर कोई स्वेच्छा से उस मत का ग्रहण करता है तो उस पर आपत्ति क्यों? यह तो उसका अधिकार है। भूतकाल में महात्मा महावीर और महात्मा बुद्ध ने अगर कोई मत ग्रहण नहीं किया तो नवीन मत का प्रवर्तन कर दिया। महर्षि दयानन्द के शास्त्रार्थ पुराणी, किरानी और कुरानियों से इसी निमित्त होते थे ताकि वे सत्य मत ग्रहण कर सकें। वे सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका में सत्य धर्म के प्रचार को आवश्यक मानते हैं- लिखते हैं 'क्योंकि सत्योपदेश के विना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं है।'

अपने विचार के प्रसार का समर्थन करते हुए धर्मात्मा विद्वान् मनुष्यों के कर्तव्य को रेखांकित करते हुए महर्षि लिखते हैं- 'इसीलिए विद्वान् आप्तों का यही मुख्य काम है कि उपदेश वा लेख द्वारा सब मनुष्यों के सामने सत्यासत्य का स्वरूप समर्पित कर देना, पश्चात् मनुष्य लोग स्वयं अपना हिताहित समझकर सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग करके, सदा आनन्द में रहैं।'

इस विमर्श से होगा क्या? वे आगे लिखते हैं- इसमें यह अभिप्राय रक्खा गया है कि जो-जो सब मतों में सत्य-सत्य बातें हैं, वे-वे सबमें अविरुद्ध होने से, उनका स्वीकार करके, जो-जो मतमतान्तरों में मिथ्या बातें हैं, उन-उनका खण्डन किया है।

आजकल एक नवीन वातावरण बनाया जा रहा है कि धार्मिक मुद्दों पर बहस नहीं होनी चाहिए। यह आर्ष परम्परा और बुद्धिवाद के विरुद्ध है। इससे जो मत केवल विश्वास पर आधारित हैं उनको तो राहत की सांस मिल गयी। उनकी बुद्धि विरुद्ध बातों पर उन्हें जवाब नहीं देना पड़ेगा और दूसरी ओर वे अनैतिक हथकण्डों को अपनाकर जोर-शोर से सफल मतान्तरण में लगे हुए हैं।

अतः यहाँ रेखांकित करने वाली बात यह है कि इस मत परिवर्तन में छल कपट, लालच, विवशता, दबाब का या ऐसे ही अनैतिक संसाधनों का प्रयोग नहीं होना चाहिए। कोई भी धार्मिक कहलाने वाला व्यक्ति या समुदाय ऐसा कर ही नहीं सकता। छल, कपट, लालच या प्रलोभन आदि देकर कराया मतान्तरण गम्भीर अपराध के दायरे में आना चाहिए।

इस आलेख में ईसाई मतान्तरण की बात करें तो भारतीयों के ईसाई बनाने के लिए उक्त सभी अनैतिकताओं का प्रयोग किया गया। ऐसे साधनों में सर्वोपरि थी सत्ता। सत्ता का ऐसा अनुचित प्रयोग कभी देखने में नही आया होगा। अंग्रेज शासक इस हद तक गए कि भारतीय संस्कृति को कमतर दिखाने के लिए वेद तथा वैदिक साहित्य का प्रस्तुतीकरण इस प्रकार किया गया कि 'भारतीय युवाओं को अपने धर्म पर शर्म आये और वे ईसाइयत को श्रेष्ठ समझकर उसे स्वीकार कर लें। मैकाले ने अपने विवरण पत्र में कहा कि भारतीय भाषाओं में साहित्यिक और वैज्ञानिक शब्दकोष का अभाव है और वे इतनी अल्प विकसित हैं कि उनमें महत्वपूर्ण ग्रन्थों का अनुवाद नहीं किया जा सकता।' क्या यह सम्मति एक षड्यंत्र का भाग नजर नहीं आती?

वस्तुतः इस शिक्षा पद्धति का एक प्रमुख उद्देश्य भारतीयों में हीन भावना उत्पन्न करना था, ताकि वे अपनी संस्कृति और भाषाओं को तुच्छ समझें और अंग्रेजी सभ्यता को श्रेष्ठ मानें। यह कृत्रिम, असत्य और पूर्णतः अनुचित था। इसके पश्चात् ईसाई नियंत्रण के स्कूल, सवर्णों द्वारा दलित समुदाय के शोषण से उपजे आक्रोश को भुनाते हुए सम्मान प्रतिष्ठा देने का विश्वास दिलाकर, उच्च शिक्षा, उच्च जीवन पद्धति, स्वास्थ्य सेवाओं के अन्तर्गत चमत्कारिक रूप से प्रभु यीशु की अनुकम्पा से असाध्य रोगों से छुटकारा दिलाने वाली सम्मोहक प्रार्थना सभाओं के माध्यम से धर्मान्तरण का कार्य अबाध गति से चल रहा है। धर्मान्तरण यदि बौद्धिक समझ पर आधारित न होकर छल कपट पर अथवा लोभ लालच देकर अथवा कृत्रिम भय बिठा कर किया जाता है तो अनुचित ही नहीं पाप है।

मतान्तरण के कारणों पर विचार करते हैं तो शायद ही कोई ऐसा उदाहरण मिलेगा कि जिसमें बाइबिल के सिद्धान्तों की श्रेष्ठता को स्वीकार कर मतान्तरण हुआ हो। बल्कि मतान्तरित होने वाले व्यक्ति को पता ही नहीं कि बाइबिल में है क्या? उन्हें बस यह पता है कि अगर वे ईसाई बन जाते हैं तो उनका और उनके परिवार के इलाज तथा शिक्षा की व्यवस्था हो जायेगी।

इस लेख में हम पंजाब राज्य की बात विशेष रूप से करेंगे जो कि एक बार्डर राज्य है। यहाँ जिस तेजी से ईसाई धर्मान्तरण का कार्य चल रहा है वह चिन्ता का विषय होना चाहिए।

यह सर्वविदित है कि देश में एक योजना के अन्तर्गत तथाकथित नीची जाति के लोगों का धर्मान्तरण काफी जोर-शोर से चल रहा है। अनैतिक तरीकों से धर्मान्तरण को रोकने के लिए देश में एक सख्त धर्मान्तरण निरोधक कानून आना चाहिए। कुछ राज्यों में अवश्य ऐसे कानून का निर्माण किया गया है। हमारी समझ में यह नही आता कि धर्मान्तरण कानून का विरोध मुस्लिम और ईसाई समाज, बल्कि यह कहना उचित होगा कि मौलवियों और पादरियों द्वारा ही क्यों किया जाता है? यह तो देश के हर नागरिक पर लागू होगा। अगर हिन्दू भी अनैतिक आचरण के द्वारा मत परिवर्तन करायेंगे तो वे भी अपराधी होंगे। हाँ चोर की दाढ़ी में तिनका है, यह और बात है।

राज्यों की बात करें तो ईसाई पादरियों द्वारा धर्मान्तरण का कार्य पंजाब में जिस तेजी, चतुराई और नए-नए प्रयोगों द्वारा किया जा रहा है वह चिन्त्य है। रिपोर्ट्स का कहना है कि पंजाब को लेकर चौंकाने वाले आंकड़े हैं, जो राज्य में ईसाईयों की जनसंख्या वृद्धि का स्पष्ट संकेत दे रहे हैं। पिछले दो दशकों में पंजाब में

ईसाई मिशनरियों द्वारा धर्मान्तरण गतिविधि में वृद्धि हुई है। बताया जाता है की २०१६ में, पेंटेकोस्टल ईसाई नेता ने दावा किया था कि ईसाई कुल आबादी का ७ से १० प्रतिशत हिस्सा हैं। मीडिया में ऐसी खबरें आई हैं कि पादरी अंकुर नरूला, गुरुशरण कौर, बलात्कार के आरोपी बजिन्दर सिंह जैसे लोग फर्जी चमत्कार, लालच, डर, अवैध तरीके से पंजाब में धर्मान्तरण गतिविधियों को अंजाम दे रहे हैं। पिछले दो दशकों में पंजाब में ईसाई मिशनरियों द्वारा धर्मान्तरण के कई वीडियो भी सामने आए हैं।

आर्य नेता श्री विनय आर्य जी ने लगभग दो वर्ष पूर्व हमें बताया था कि वे रात्रि में पंचकूला के लिए गाड़ी से जा रहे थे। रास्ते में एक जंगल में जैसे मंगल हो रहा था। हायालुइया की आवाजे सुन ये लोग अन्दर गए। इन्हें अन्दर जाने से रोका गया। हो क्या रहा था? करिश्मायी प्रार्थना सभा और धर्म परिवर्तन इतनी बड़ी संख्या में, पर प्रशासन का नामोनिशान नहीं। दो-तीन वर्ष पूर्व की यह बात है। तब से तो व्यास में न जाने कितना पानी बह गया होगा।

संभवतः सन् २०२२ में इंडिया टुडे की ओर से पंजाब में तीव्रगति से हो रहे ईसाई धर्मान्तरण पर प्रकाश डाला गया था। रिपोर्ट का दावा था कि पंजाब राज्य में ६५ सहस्र पादरियों ने राज्य के सभी २३ जिलों में लाखों सिक्खों का धर्मान्तरण किया है। पंजाब ईसाई धर्म को तेजी से बढ़ाने वाली मिशनरियों की एक प्रयोगशाला बन गया है। जो पादरी इस कार्य में संलग्न हैं उन के नाम हैं- अंकुर नरूला, बाजिन्दर सिंह, अमृत संधू, कंचन मित्तल, रमन हंस, गुरनाम सिंह खेड़ा, हरजीत सिंह, सुखपाल राणा, और फारिस मसीह। इनके अनुयाइयों की बड़ी संख्या है, पंजाब में इन लोगों ने अपने धर्मान्तरण केन्द्रों का एक बड़ा तंत्र बना लिया है, वहीं सोशल मीडिया पर इनके करोड़ों अनुयायी हैं।

सभी पादरी चमत्कारी इलाज करने का दावा करते हैं। इन सभी का व्यक्तित्व आकर्षक है, ये प्रार्थना सभा को रूमानी और सम्मोहक बना देते हैं।

इनके चमत्कारी स्वास्थ्य लाभ के दावों की रोगी लोग मंच पर आकर स्वयं गवाही देते हैं, इस प्रकार हालेलुइया का घोष धर्मान्तरण का आधार बना हुआ है। यहाँ हम उल्लेख कर दें तो अनुचित नहीं होगा कि उत्तर प्रदेश में धर्मान्तरण विरोधी कानून है। महेश नाम का एक व्यक्ति उक्त प्रकार की धर्म सभाओं में लोगों को ले जाता था तथा येन-केन-प्रकारेण उनका धर्मान्तरण कराता था। उसे गिरफ्तार किया गया। उसकी जमानत याचिका इलाहबाद हाईकोर्ट द्वारा खारिज कर दी गयी। इस फैसले में न्यायाधिपति रोहित रंजन अग्रवाल महोदय की टिप्पणी महत्वपूर्ण है। 'कोर्ट ने कहा कि अगर धार्मिक सभाओं में इस तरह से धर्मान्तरण होता रहा तो एक दिन भारत की बहुसंख्यक आबादी अल्पसंख्यक में बदल सकती है। हाईकोर्ट ने अपने फैसले में स्पष्ट किया कि भारतीय संविधान का अनुच्छेद २५ प्रत्येक व्यक्ति को अपने धर्म को मानने, पालन करने और प्रचार करने का अधिकार देता है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि कोई व्यक्ति दूसरों का धर्म परिवर्तन कराए। न्यायाधीश रोहित रंजन अग्रवाल ने कहा कि गरीब लोगों को गुमराह कर उनका धर्म परिवर्तन कराना अनुचित है और इसे रोकने की आवश्यकता है।' (यद्यपि आज जिस समय हम इस आलेख को लिख रहे हैं इस मामले में माननीय उच्चतम न्यायालय ने इस टिप्पणी को अनावश्यक बताते हुए हटा दिया है और यह भी स्पष्ट कर दिया है कि

यह अन्य किसी मामले में नजीर के तौर पर नहीं देखी जायेगी।)

क्रिप्टो क्रिश्चियन का एक नया प्रयोग विशेष रूप से पंजाब में किया जा रहा है। यह क्रिप्टो क्रिश्चियन है क्या? **क्रिप्टो-ईसाई** की अवधारणा को परिभाषित करते हुए जॉन दयाल कहते हैं कि 'यह एक अद्वितीय दोहरा जीवन है। सार्वजनिक रूप से हिन्दू और आधिकारिक रिकॉर्ड पर हिन्दू, जबकि व्यक्तिगत रूप से यीशु मसीह के प्रति वफादारी दिखाते हैं। जर्मन फेडरल गवर्नमेंट साइट पर २०१४ के एक लेख में दयाल ने लिखा है कि ये समुदाय खासकर आन्ध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, पंजाब और तमिलनाडु जैसे राज्यों में बड़ी संख्या में रहते हैं। ये लोग अपने आधिकारिक पंजीकरण से बचते हैं, ताकि वे सरकारी कार्यक्रमों से लाभ उठा सकें।' अन्त में जो दयाल ने कहा है वह महत्वपूर्ण है 'वे सरकारी लाभ को छोड़ना नहीं चाहते।'

क्रिप्टो क्रिश्चियन एक ऐसा नया प्रयोग है जो धर्मान्तरित होने वाले के द्वन्द को समाप्त कर देता है। वेशभूषा, रहन-सहन तथा परिवेश से सबको लगाव होता है वह यथावत् रहने दिया जाता है। इसमें सिखों को उनकी पगड़ी उतारने के लिए नहीं कहा जाता क्योंकि वे जानते हैं कि पगड़ी सिखों के लिए कितनी पवित्र है। दूसरे आरक्षण की सुविधा धर्मान्तरण में बड़ी बाधक थी। क्रिप्टो क्रिश्चियन इसका उत्तर है। अब धर्मान्तरण के साथ भौतिक रूप से कोई परिवर्तन नहीं दिखता बस आस्था बदल जाती है जो समय के साथ दृढ होती जाती है और पीढ़ी परिवर्तन के साथ पूर्ण बदलाव लाती है। ऊपर लिखे सभी पादरी ईसाई बन चुके हैं, लेकिन इन्होंने अपने हिन्दू या सिख नामों को नहीं बदला है। यह अपने धार्मिक चिह्नों जैसे पगड़ी आदि का उपयोग करते हैं, जो लोगो को भ्रमित करने का ही एक उपक्रम है।

पंजाब में धर्मान्तरण के जानकार कहते हैं कि ये देसी प्रचारक पंजाब के सांस्कृतिक प्रतीकों में रचे-बसे हैं। जैसे, पगड़ी, लंगर (वे इसे जीसस दा लंगर कहते हैं), टप्पा गीत, गिद्दा नृत्य क्योंकि यह सब उनका अपना है। इसलिए उनके सत्संग आपको अलग न दिखकर उसी सिलसिले की कड़ी लगते हैं। ये इसाई धर्म का उपदेश जिसका इन्हें प्रशिक्षण दिया जाता है देते हैं लेकिन बोली पूरी तरह से स्थानीय होती है। उदाहरण के लिए 'दशमाँश' दान यहाँ 'दसवंड' बन जाता है। ईसाइयों का यह क्रिप्टो क्रिश्चियन वाला प्रयोग अत्यधिक सफल रहा है। कहा जाता है कि पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री चरण जीत सिंह चन्नी भी एक क्रिप्टो क्रिश्चियन हैं।

यूँ तो पूरे पंजाब में ईसाई मिशनरी सक्रिय होकर सिखों को ईसाई बना रही है और ऐसा लगता है कि यह सब दबे पाँव हो रहा है। लेकिन, जालंधर जिले के खाँबड़ा गाँव में बने चर्च में प्रत्येक रविवार को प्रार्थना करने के लिए मोटर साइकिल से लेकर कारों और किराए की स्कूली बसों में पहुँचने वाले १०-१५ हजार लोगों को देखने के बाद यह स्पष्ट होता है कि धर्मान्तरण का 'बाजार' तेजी से फल-फूल रहा है।

दुनिया भर में पेंटेकॉस्टल मूवमेंट से प्रभावित करिश्माई ईसाइयत की एक लहर पंजाब में सैलाब सरीखी बन रही है। इस पर नजर रखने वालों का कहना है कि आप रविवार की खाम्ब्रा गाँव में अंकुर नरूला की मिनिस्ट्री का जलवा देखिये। किसी ने सही कहा है कि यहाँ का माहौल अक्षरधाम से कम नहीं है।

एक रिपोर्ट में कहा गया है कि अंकुर नरूला जिस चर्च ऑफ साइन्स ऐंड वंडर्स के कर्त्ताधर्त्ता हैं, वह पंजाब के नए करिश्माई इदारों में सबसे बड़ा है। यह छोटे-मोटे साम्राज्य सरीखा है। पंजाब के नौ जिलों के अलावा बिहार और बंगाल के साथ अमेरिका, कनाडा, जर्मनी

और ग्रेटर लंदन के हैरो में भी उसके ठिकाने हैं। शुरू में उनके तीन शिष्य थे। अब उनकी मिनिस्ट्री दुनिया भर में ३,००,००० अनुयायियों का दावा करती है, जो उन्हें प्यार से 'पापा बुलाते हैं। नरूला की मिनिस्ट्री में रविवार को कम से कम १०,०००-१५,००० की भीड़ जुटती है। सैकड़ों मोटरसाइकिलें, कारें आपको विशाल पार्किंग में दिखेंगी।

चंगाई सभाओं का इस धर्मान्तरण में अहम् योगदान है। आप इससे सम्बन्धित वीडियोज देखें। हजारों की संख्या में लोगों की भीड़ के बीच मंच पर आकर चीखते रोग से तथाकथित रूप से उन्मुक्त हुए रोगी, 'मैं देख नही पाता था परमेश्वर की कृपा से अब देख पा रहा हूँ', जैसे दावे सामने खड़े हजारों को परमेश्वर की भेड़ों में शामिल होने हेतु प्रेरित करते हैं, यह सब देख सकते हैं। किसी पादरी के चमत्कार के दावे इस पर भी निर्भर हैं कि वह कितना नाटकीय है। चमत्कारों से कुछ भी अछूता नहीं: भूत उतारना, कैंसर, जोड़ों का दर्द, बांझपन तक सबका इलाज, नशे की लत से लेकर नौकरी, वैवाहिक रिश्तों और वीजा तक सब कुछ। कुछ ने तो मुर्दों को जिला देने का भी दावा किया है। हालाँकि, जालंधर के ताजपुर गाँव में विवादास्पद पादरी बजिन्दर सिंह के चर्च ऑफ ग्लोरी ऐंड विजडम में चार वर्षीय कैंसर रोगी तनीषा की मृत्यु हो गई पर उपचार में आस्था बेरोकटोक चलती रही।

समाज शास्त्रियों का मानना है कि ईसाइयत को अपनाने वाले अधिकांश अनुयायी पंजाब के नौ सबसे शोषित दलित/आदिवासी समुदायों से आते हैं, जिन्हें समृद्धि के दायरे से बाहर रखा गया है- मजहबी सिख-वाल्मीकि, सांसी, राय सिख, बावरिया, बाजीगर, बराड़, बंगला, गढीले और नट।

लेकिन जिन्दगी में बेहतर अवसरों की चाहत, जाति के दंश से बचाव और अपने लिए एक समुदाय की भावना रखने की भावना का धर्मान्तरण में सर्वाधिक योगदान है। यह जानना है तो हरिन्दर सिंह को सुनें। २०१८ में यीशु की रोशनी में आने का दावा करने वाले अमृतसर के नारायणगढ़ के हरिन्दर सिंह कहते हैं- 'मेरे बच्चे अब अच्छे स्कूलों में जा सकते हैं, अंग्रेजी सीख सकते हैं। पादरी एक मिनट में नौकरी दिला रहे हैं। मुझे ग्रन्थी साहब से इतना स्नेह कभी नहीं मिला।

कोई ठोस आँकड़े नहीं हैं पर एक अनुमान के मुताबिक पंजाब में पादरियों की कुल संख्या ६५,००० है। अधिकांश पादरी दावा करते है कि वे धर्मान्तरण नहीं कराते, केवल इलाज करते हैं। लेकिन यहाँ तौबा, पश्चाताप, और बप्तिस्मा की रस्म कराई जाती हैं।

दित्त सिंह ने सियालकोट में १८७३ में सिर पर मैला ढोने वाली जाति जिसे अब वाल्मीकि (हिन्दुओं में) और मजहबी सिख की उपाधि दी गई है, के सदस्यों का बपतिस्मा करवाकर पंजाब में ईसाइयत में धर्मान्तरण की पहली लहर चलाई। उनकी जाति के लोग स्वप्रेरणा से इतनी बड़ी तादाद में उनके पीछे चल पड़े कि चर्च भी भौंचक रह गया। महाराजा रणजीत सिंह के बेटे दलीप सिंह (जो बाद में फिर अपने धर्म में लौट आए) या कपूरथला के 'राजा सर' हरनाम सिंह सरीखी शख्सियतों के धर्मान्तरण ने भी खासी खलबली मचाई थी। आर्यसमाज ने वाल्मीकि समुदाय को हिन्दू घोषित करते हुए इनकी घर वापिसी का अनथक प्रयास किया।

धर्मान्तरण में तेजी आयी कैसे? एक रिपोर्ट बताती है कि दरअसल चीजें २००० के दशक में तमिल ईसाई धर्मप्रचारक दिनकरण के आने के साथ बदलनी शुरू हुईं। उनका करिश्माई टूलकिट अमेरिकी टीवी इवेंजेलिस्ट के सांचे में ढला था। उनके बाद उनके साथी रहे नरूला सरीखे दूसरे लोगों ने पेंटेकोस्टल आध्यात्मिकता का पूरा गुलदस्ता सजा दिया। संगीत और नृत्य के जरिए परमेश्वर के साथ समागम, परमानन्द की अनुभूति, धार्मिक चिकित्सा के चमत्कारिक कृत्य।

ईसाई मिशनरियों ने अपने मत के प्रसार हेतु जितने प्रयोग किये हैं उतने अन्य किसी ने नहीं। क्रिप्टो क्रिश्चियन के बारे में आपने ऊपर पढ़ा।

एक ऐसा ही अन्य महत्त्वपूर्ण कार्य है ईसाई प्रतीकों का देशीकरण। इन प्रचारकों को लगा कि आदिवासी समुदाय विदेशी भगवान को अपनाने में झिझक महसूस करता है तो उन्होंने माँ मरियम और जीसस का देशीकरण करने में कोई संकोच नहीं किया। ऐसी सोच अन्य मतों में सम्भव ही नहीं। परन्तु ईसाइयों ने ऐसा बेधड़क किया। लगभग १० वर्ष पूर्व झारखण्ड के सिंहपुर में एक चर्च में मदर मेरी तथा जीसस की प्रतिमाएँ ऐसी बनवा कर लगायीं गयीं जैसे वे भारतीय आदिवासी समाज के हिस्से हों। लाल बार्डर वाली श्वेत साड़ी पहने मरियम बिंदी लगाए हुए भी हैं। यद्यपि इस बात को लेकर आदिवासी समाज में पर्याप्त रोष उत्पन्न हुआ। उनका मानना है कि जीसस व मैरी को आदिवासी बनाकर प्रस्तुत करना सरासर धोखा है जो आदिवासियों को फुसलाने के उद्देश्य से किया है। आदिवासी नेता सामा का कहना है "Showing Mother Mary as a tribal is a part of the larger design to make the tribal population believe that she was from their community and confuse them." Tigga added- "One hundred years from now, people here would start believing that Mother Mary was actually our tribal goddess. It's an attempt to convert Sarna tribals to Christianity. If they do not remove it, a nationwide protest will be organized." Tigga told the Times of India that "Mother Mary was a foreigner and showing her as a tribal woman is definitely not correct."

यह स्थिति केवल भारत तक सीमित नहीं है। पूरे विश्व में ईसाई प्रचारकों ने यह पद्धति अपनायी है। क्या अफ्रीका क्या चीन कोई कोना उन्होंने छोड़ा नहीं है। इससे स्पष्ट है कि अपने मत के प्रचार के लिए वे किसी भी स्तर तक जा सकते हैं।

इस प्रकार जहाँ अपने ही भाइयों को अछूत मान उनका तिरस्कार तथा उनके साथ अमानवीय व्यवहार धर्मान्तरण के लिए उर्वरक भूमि तैयार करता है तो लालच, झूठ के सहारे बहलाना फुसलाना आदि अनैतिक साधनों से ये पादरी इस फसल को पकाकर काटने में सन्नद्ध है। इसपर जितना शीघ्र विराम लग सके वही देशहित में है।

नोट- आजकल मत और धर्म को समानार्थक मान लिया है जो सही नही है। इस लेख में मत के स्थान पर प्रचलित होने के कारण धर्म शब्द का प्रयोग भी कर लिया गया है।

– अशोक आर्य

सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर

चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो। सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु, कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है-

सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर लागत मूल्य से आधी कीमत में सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ के कवर पर दिया जावेगा।

1000 प्रतियों के प्रकाशन हेतु 25000 रुपये का दान देने का श्रम करें। 10 प्रतियाँ निशुल्क आपके पास भेजी जाएँगी।

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अन्तर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, उदयपुर खाता क्रमांक 310102010041518, IFSC-UBIN 0531014 में जमा कर सूचित करें।

अशोक आर्य, अध्यक्ष-न्यास | भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास | डॉ. अमृत लाल तापड़िया, संयुक्तमंत्री-न्यास

क्या ईश्वर अपनी प्रशंसा चाहता है?

[वेदों पर किए प्रत्येक आक्षेप का उत्तर–आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक द्वारा]

यहाँ सुलेमान रजवी ने ऋग्वेद ६/५/२ के दो भाष्य निम्न प्रकार उद्धृत किये हैं-

Rig Veda 7.6.3 "May the fire divine chase away those infidels, who do not perform worship and who are uncivil in speech. They are niggards, unbelievers, say no tribute to fire divine and offer no homage. The fire divine turns those godless people far away who institute no sacred ceremonies."

–Tr. Satya Prakash Saraswati

पदार्थ- हे राजन् (अग्निः) अग्नि के तुल्य तेजोमय! आप (अक्रतून) निर्बुद्धि (ग्रथिनः) अज्ञान से बंधे (मृध्रवाचः) हिंसक वाणी वाले (अयज्ञान्) संगादि वा अग्निहोत्रादि के अनुष्ठान से रहित (अश्रद्धान्) श्रद्धारहित (अवृधान्) हानि करने हारे (तान्) उन (दस्यून्) दुष्ट साहसी चोरों को (प्रप्र, विवाय) अच्छे प्रकार दूर पहुँचाइये (पूर्वः) प्रथम से प्रवृत्त हुए आप (अपरान्) अन्य (अयज्यून्) विद्वानों के सत्कार के विरोधियों को (पणीन्) व्यवहार वाले (निश्चकार) निरन्तर करते हैं।

भावार्थ- इस मन्त्र में वाचकलु.- हे विद्वानो! तुम लोग सत्य के उपदेश और शिक्षा से सब अविद्वानों को बोधित करो, जिससे ये अन्यों को भी विद्वान् करें।

पदार्थ- (नि) (अक्रतून्) निर्बुद्धीन् (ग्रथिनः) अज्ञानेन बद्धान् (मृध्रवाचः) मृध्रा हिंस्रा अनृता वाग्येषान्ते (पणीन्) व्यवहारिणः (अश्रद्धान्) श्रद्धारहितान् (अवृधान्) अवर्धकान् हानिकरान् (अयज्ञान्) सङ्गाद्यग्निहोत्राद्यनुष्ठानरहितान् (प्रप्र) (तान्) (दस्यून्) दुष्टान् साहसिकाँश्चोरान् (अग्निः) अग्निरिव राजा (विवाय) दूरं गमयति (पूर्वः) आदिमः (चकार) करोति (अपरान्) अन्यान् (अयज्यून्) विद्वत्सत्कारविरोधिनः।

भावार्थ- अत्र वाचकलु.- हे विद्वांसो यूयं सत्योपदेश शिक्षाभ्यां सर्वानविदुषो बोधयन्तु यत एतेऽपरानपि विदुषः कुर्य्युः।

यहाँ आक्षेपकर्त्ता ने अपने शब्दों में इन भाष्यों पर कोई टिप्पणी नहीं की है, परन्तु स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती के अंग्रेजी अनुवाद के कुछ वाक्यों को रेखांकित अवश्य किया गया है, जिससे यह संकेत मिलता है कि इस पर आक्षेपकर्त्ता के वही आक्षेप हैं, जो आक्षेप क्रमांक १ में दर्शाए गए हैं। जो भी पाठक हमारे आक्षेप क्रमांक १ के उत्तर को समझ लेंगे, उन्हें इस आक्षेप का भी उत्तर स्वयं मिल जाएगा। निश्चित ही स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती का अंग्रेजी अनुवाद न तो उचित है, न पर्याप्त है और न स्पष्ट ही। स्वामी जी की समस्या यह भी हो सकती है कि अंग्रेजी भाषा में हिन्दी वा संस्कृत भाषा के गम्भीर भावों के समान कोई शब्द ही नहीं है। इस कारण से वेदादि शास्त्रों का किसी अन्य भाषा में अनुवाद करना,

विशेषकर अंग्रेजी आदि निर्धन भाषाओं में अनुचित और संकटपूर्ण है। स्वामी जी को चाहिए था कि वे अंग्रेजी भाषा में ऋषि दयानन्द के भाष्य की व्याख्या करते। जहाँ उपयुक्त शब्द नहीं मिलते हैं, वहाँ और भी अधिक स्पष्ट व्याख्या की आवश्यकता होती है। दूसरा भाष्य आक्षेपकर्त्ता ने ऋषि दयानन्द का दिया है, जिस पर कोई भी आक्षेप नहीं किया गया है और हमें न ही लगता कि ऋषि दयानन्द के इस भाष्य पर कोई भी बुद्धिमान् मानवतावादी असहमत हो सकता है। अब हम इस मन्त्र पर विचार करते हैं। वह मन्त्र इस प्रकार है-

न्यक्रतून्ग्रथिनो मृध्रवाचः पर्णीरश्रद्धाँ अवृधाँ अयज्ञान्।
प्रप्रतान्दस्यूँरग्निर्विवाय पूर्वश्चकारापराँ अयज्यून्॥

(ऋग्वेद ६/५/२)

आधिदैविक भाष्य- यह पाठकों के लिए पुस्तक रूप में ही भविष्य में उपलब्ध हो सकेगा।

आधिभौतिक भाष्य- यह भाष्य आपने उद्धृत किया ही है और इस पर आपकी कोई टिप्पणी भी नहीं है।

अविद्याग्रस्त अर्थात् मूढ़मति, हिंसा के लिए लोगों को प्रेरित करने वाले, समाज में विघटन पैदा करने वाले, अग्निहोत्रादि से पर्यावरण को शुद्ध न करने वाले, विद्या एवं मानवता पर श्रद्धा न रखने वाले, हानिकारक दुष्ट अपराधियों को राजा यदि दूर नहीं करेगा, उन्हें सन्मार्ग पर नहीं लाएगा, तो क्या उनकी पूजा करेगा? उनको दूर करने से ही किसी भी राष्ट्र वा समाज का हित हो सकता है, अन्यथा राष्ट्र और विश्व में अराजकता ही फैलेगी। इसलिए ऋषि दयानन्द का भाष्य सर्वथा उचित और कल्याणकारी है।

आध्यात्मिक भाष्य- (अग्निः) शरीरस्थ विद्युदग्नि (अक्रतून्) {क्रतुः=कर्मनाम (निघं.२/१), प्रज्ञानाम (निघं.३/९)} जो कोशिका आदि पदार्थ निष्क्रिय वा मृत हो जाते हैं, (ग्रथिनः) जो पदार्थ विकृत वा अनिष्ट बन्धनों से युक्त होते हैं (मृध्रवाचः) {वाक्= वागेवाऽग्निः (श. ३/२/२/१३)} अनिष्टकारी अग्नि अर्थात् जिस विकृत अग्नि के द्वारा शरीर में नाना रोग हो सकते हैं (अयज्ञान्) ऐसे अवशिष्ट पदार्थ जो शरीर के लिए उपयोगी नहीं होते (अश्रद्धान्) {श्रद्धा= तेज एवं श्रद्धा (श.११/३/१/१/१)} जो पदार्थ तेजहीन वा दुर्बल हो चुके हैं (अवृधान्) जो पदार्थ शरीर के लिए हानिकारक हैं अर्थात् विजातीय पदार्थ (तान्, दस्यून्) वे ऐसे सभी पदार्थ शरीर को क्षीण करने वाले होते हैं, उन सभी हानिकारक पदार्थों को (प्र, प्र, विवाय) बहिर्गत अथवा नष्ट करता रहता है। ऐसे सभी पदार्थ ही अवशिष्ट रूप होकर मल-मूत्र, स्वेद, कफ, श्वास आदि के द्वारा निरन्तर निःसृत होते रहते हैं। (पूर्वः) इन सब पदार्थों की उत्पत्ति से पूर्व से विद्यमान वह शरीरस्थ अग्नि (अपरान्) अन्य पदार्थों को (अयज्यून्) जो पदार्थ सप्तधातुओं में परिणत नहीं हो रहे, उनको (पणीन्, नि, चकार) सम्यक् क्रियाओं और बलों से निरन्तर युक्त करता रहता है।

भावार्थ- शरीर में रहने वाले विद्युत् एवं अग्नि पदार्थ शरीर की सभी क्रियाओं को संचालित करने में अनिवार्य भूमिका निभाते हैं। विद्युत् और ऊष्मा के कारण ही शरीर में अनेक छेदन और भेदन की क्रियाएँ चलती रहती हैं। भोजन के अवयवों का सूक्ष्म भागों में टूटना, पाचक रसों का निकलना, उनसे नाना प्रकार की रासायनिक क्रियाओं का होना, रसरूप हुए भोजन का आँतों के द्वारा अवशोषित होना, फुफ्फुस, हृदय और मस्तिष्क के साथ-साथ सभी नाडियों और नसों का क्रियाशील होना, उत्सर्जन आदि सभी तन्त्रों का कार्य करना, बाहर से आए जीवाणुओं और विषाणुओं को रक्त के श्वेत अणुओं द्वारा नष्ट किया जाना, शरीर की कोशिकाओं में ऊर्जा की उत्पत्ति होना ये सभी कार्य विद्युत् और ऊष्मा के द्वारा ही सम्पन्न होते हैं। जिन-जिन मन्त्रों में भी आपने हिंसा के आरोप लगाये हैं, उन-उन मन्त्रों का इसी प्रकार उत्तर समझना चाहिए। हिंसक, चोर, डाकू, ज्ञान के शत्रु, ज्ञानी व परोपकारियों को दुःख देने वाले, कंजूस, सामर्थ्य होने पर भी परोपकार न करने वाले, आतंकवादी एवं निर्बलों को सताने वाले जैसे लोगों को दण्ड देना हिंसा नहीं, बल्कि सच्ची अहिंसा है, जिससे सभी प्राणी सुखी रह सकें। इस कारण हम हिंसा आदि दोषों से आरोपित अन्य मन्त्रों पर कोई भी उत्तर देना आवश्यक नहीं समझते।

लेखक- आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक
श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास, वेद विज्ञान मन्दिर
भागलभीम, भीनमाल, चलभाष- ९४१४८३४४०३

सुखी कैसे रहें?

गतांक से आगे .....

1. सुख-दुःख के भेद और उपाय-

अनुकूल-प्रतिकूल अनुभूति का नाम ही सुख-दुःख है और अनुभव का सम्बन्ध शरीर, मन से अलग-अलग तथा इन दोनों से इकट्ठा भी होता है। इष्ट-अनिष्ट की प्राप्ति या वियोग आदि का अनुभव या अनुभव का फल जिस शरीर या मन पर पड़ता है, वह सुख-दुःख उसी का कहलाता है। हाँ! सुख-दुःख किसी क्रिया का नाम नहीं है, क्योंकि जो क्रिया आज सुख का कारण है, वही कल दुःख दे सकती है। जैसे कि गर्मी में वस्त्र की न्यूनता या हीनता सुखद होती है, तो वही ठण्ड में दुःखद बन जाती है। अतः सुख-दुःख अनुभव पर निर्भर हैं।

दुःखों को दूर करने और सुख-प्राप्ति के उपाय पर जब हम विचार करते हैं, तो स्पष्ट होता है, कि दुःख अनेक प्रकार के हैं। उनमें से कुछ सुख प्राप्ति के लिए अनिवार्य हैं। जैसे कि भोजन के आनन्द के लिए भूख का दुःख या भोजन पकाने का कष्ट। हाँ! अनेक दुःख व्यक्ति के अपने अज्ञान, असंयम, अदूरदर्शिता, स्वार्थपरता आदि के कारण होते हैं। इसीलिए संसार दुःखमय बना हुआ है, इनको हटाना चाहिए और ये काफी मात्रा में हट भी सकते हैं। दुःख भी एक रोग है, जो कि अज्ञान आदि के कारण होता है। अतः उस-उस कारण को दूर कर देने से वह हट सकता है।

2. सुख की कुंजी-

यदि हम अपनी दिनचर्या निश्चित, व्यवस्थित बना लें, तो हम सरलता से सुखी हो सकते हैं। हमारे दुःखों का एक बड़ा कारण यह भी है, कि हमारी दिनचर्या व्यवस्थित नहीं होती। दिनचर्या के अनियन्त्रित होने से हमारी आवश्यक इच्छायें पूर्ण नहीं होतीं और तब दुःखी होते हैं। यदि हम अपनी एक निश्चित दिनचर्या बना लें, तो हमारा जीवन बहुत सुखी हो सकता है। इच्छाओं की विविध श्रेणियों के अनुसार हम इनको पाँच भागों में बाँट सकते हैं। यदि हम इन पाँचों को प्रतिदिन पूर्ण कर लें तो इच्छाओं की आपूर्ति से पश्चातापजन्य दुःख नहीं होंगे, कि मैने अमुक कार्य तो अभी या आज तक किया ही नहीं?

इच्छाओं की पाँच श्रेणियाँ इस प्रकार से हैं-

1. शारीरिक विकास
2. भौतिक समृद्धि
3. आत्मिक उन्नति
4. सामाजिक कर्त्तव्य और
5. आस्तिकबुद्धि।

हाँ! रुचि के भेद से इनके क्रम में मतभेद हो सकता है, पर इनकी उपयोगिता में सन्देह नहीं। आइए! अब क्रमशः इन पर विचार करते हैं।

3. पहला सुख निरोगी काया

'जीवन का पहला और सब से बड़ा सहज आनन्द है- स्वस्थता'। जितने भी सांसारिक सुख एवं कार्य हैं, उनकी प्राप्ति का, आरोग्यता प्रथम संसाधन है, क्योंकि इसके होने पर ही सब प्रकार के सुख प्राप्त

किए जा सकते हैं। स्वस्थ ही आत्मिक साधना तथा हर प्रकार के भोगों को भोगने में समर्थ होता है।

मानव अपने जीवन को सुखी बनाने के लिए अनेक वस्तुओं का संग्रह करता है। वह संग्रह किसी को तभी सुख दे सकता है, जब वह निरोग होता है। रोगी किसी प्रकार का सुख प्राप्त नहीं कर सकता, रोगी और कुछ क्या करेगा, वह तो अपने आपको भी सम्भाल नहीं सकता। तभी तो कहा है-

गर दौलतों से भरा है–तेरा तमाम घर।
बीमार है तो खाक से–बदतर है यह मगर।।

रोगी के बस का और तो क्या, वह तो आराम से गद्दों पर भी लेटा नहीं रह सकता अर्थात् नींद का आनन्द भी स्वस्थ ही उठा सकता है। अतएव चरक (निदान ६, ७) ने कहा है- अन्य सब कुछ छोड़कर प्रथम शरीर की देखभाल करे, क्योंकि उसके बीमार होने पर सब कुछ होते हुए भी बेकार हो जाता है।

सर्वमन्यत् परित्यज्य शरीरमनुपालयेत्।
तदभावे हि भावानां सर्वाभावः शरीरिणाम्।।

4. स्वस्थ की परिभाषा-

भारतीय शास्त्रकारों का विचार है, कि मानव जीवन के चार उद्देश्य हैं, जिनको पुरुषार्थ चतुष्टय भी कहते हैं और वे हैं धर्म-अर्थ-काम और मोक्ष। अन्य योनियों की अपेक्षा मानव जीवन की सार्थकता तभी है। जब वह इस अनमोल चोले को प्राप्त करके इन चारों पुरुषार्थ को साधने का यत्न करता है। हाँ! पुरुषार्थ चतुष्टय की सिद्धि का मुख्य साधन होने से यह विचारना अत्यावश्यक हो जाता है कि स्वस्थ किसको कहते हैं? इसका सुन्दर उत्तर देते हुए सुश्रुतकार (सूत्र १५, ४७-४८) ने कहा है- भूख लगना, खाए-पिए का सरलता से पचना, मल-मूत्र और अपानवायु का स्वाभाविक रूप से विसर्जित होना, शरीर का हलकापन, वात-पित्त-कफ का अपने शरीर के अनुपात से होना, जठराग्नि का पाचन क्रिया को उचित प्रकार से करना, शरीर के धारक रस-रक्त-मांस-मज्जा-मेद-अस्थि और वीर्य नामक सातों धातुओं का अपने-अपने अनुपात से होना। उपर्युक्त क्रियाओं के स्वाभाविक रूप से होने के कारण जिसका आत्मा-मन और इन्द्रियाँ प्रसन्न हैं, वही स्वस्थ है।

स्वस्थ=स्व+स्थ- जो अपने आप में स्थित है अर्थात् जो व्यक्तिगत कार्यों को करने के लिए दूसरों का मुँह नहीं ताकता। स्वस्थ अपने आप पर निर्भर होता है और रोगी दूसरों पर। जैसेकि अत्यधिक शराब पी लेने पर शराबी अपने आपे में नहीं रहता। उसके हाथ-पैर और वाणी आदि अंग लड़खड़ाते हैं तथा उसको कुछ भी सुध-बुध नहीं रहती कि मैं किसको क्या कह रहा हूँ? सु+अस्+थ- जो अच्छी स्थिति में है अर्थात् जिसकी शारीरिक मशीन अपना कार्य ठीक प्रकार से करती है, वही स्वस्थ है। जैसे एक अच्छा यन्त्र अपना कार्य ठीक प्रकार से करता है।

आरोग्यता का मार्ग-

सुखदायक स्वास्थ्य विशेषतः चारों बातों पर निर्भर है। पवित्रता और प्रसन्नता के साथ आहार, व्यायाम, ब्रह्मचर्य और निद्रा।

5. पवित्रता-

शुद्धि, सफाई, शुचिता, पवित्रता, स्नान, संस्कार, तप शब्द भारतीय साहित्य में बहुत अधिक प्रयुक्त हुए हैं। इनका अभिप्राय सफाई ही है। शुद्धि केवल

शिव-सुन्दर और सत्य का मूल ही नहीं, अपितु सुख प्राप्ति और दुःख निवृत्ति का भी कारण है। मल, प्रदूषण रोगों की जड़ है और संक्रामक रोग तो गन्दगी से ही होते हैं, तभी तो रोग का एक नाम विकार भी है। सभी प्रकार के रोगों का मूल कारण दूषित मल है। जो कि अनेकविध गलत व्यवहारों और अनुपयुक्त खान-पान, रहन-सहन से होते हैं। रोगों के मुख्य रूप से दो कारण हैं- अस्वच्छता और कुपोषण।

अस्वच्छता बहुत कुछ हमारे रहन-सहन की गन्दगी के कारण है। हमारे नगरों की नालियों में बहते हुए मल तथा हर तरह का कूड़ा, गलियों-सड़कों पर पड़ा थूक-बलगम और हर प्रकार का गन्द इसके गवाह हैं कि हम जहाँ-कहीं, जब-कभी गन्दगी बिखेरते रहते हैं। जैसेकि हमें सफाई और स्वास्थ्य से प्यार ही न हो। आज के प्रदूषण का मूल अस्वच्छता भी है।

अतः शारीरिक रोगों और उनसे होने वाले दुःखों से छुटकारा प्राप्त करने के लिए शरीर, भोज्य पदार्थ, वस्त्र, बर्तन, भवन आदि व्यवहार की वैयक्तिक वस्तुओं और सामूहिक गलियों, सड़कों, यानों, नगरों की सफाई की ओर भी ध्यान देना चाहिए।

6. प्रसन्नता-

स्वास्थ्य और सुख प्राप्ति के लिए प्रसन्नता एक बहुत बड़ा वरदान है। तभी तो कहते हैं- प्रसन्नता में जीवनी शक्ति है, जो कि हर एक के लिए तथा विशेषतः बीमार के लिए बहुत मूल्यवान है। अतः 'हँसो और स्वस्थ रहो' का सन्देश बहुत ही लाभदायक है।

जिसे जिन्दगी में हँसना न आया।
उसे जीना भी न आया।।

मानव जीवन के उत्तरदायित्वों और संघर्षों से बोझिल, निराश, उदास के लिए हल्के होने का सरल साधन मुस्कान ही है। तभी तो कहते हैं-

जिन्दगी है गम में हंसना–ऐ बहार।
मुस्करा कर गुंचा यह समझा गया।।
जिन्दगी जिन्दादिली का नाम है।
मुर्दादिल क्या खाक जिया करते हैं।।

प्रसन्नता का मन, विचारों से विशेष सम्बन्ध है, तभी तो सुमन शब्द फूल और प्रसन्नता के लिए प्रयुक्त होता है। सुमन जब खिला हुआ होता है, तो वह सबको अच्छा लगता है, उसको देखकर सब प्रसन्न होते हैं। इसीलिए 'फूलों से तुम हँसना सीखो' वाक्य अपनी सार्थकता दर्शाता है। सुमन की तरह जब मन सु-अच्छा, खिला हुआ होता है, अन्दर-बाहर से एक-सा होता है, तो सभी प्रसन्न होते हैं। अतः हँसो और हँसने से जी हलका होने दो' की सीख सुखी जीवन के लिए एक आवश्यक पाठ है, क्योंकि हँसी में ही खुशी छिपी है।

प्रसन्न रहने के लिए चिन्ता से बचना सबसे जरूरी है, क्योंकि चिन्ता प्रसन्नता को खा जाती है। तब सुखी जीवन का खिला फूल मुरझा जाता है। 'कार्य की अधिकता मनुष्य को नहीं मारती, बल्कि चिन्ता मारती है।' चिन्ता ने आज तक कभी किसी कमी को पूरा नहीं किया। आज की परिधि में जीना ही, चिन्ता की अचूक औषधी है।

7. आरोग्य का पहला साधन-आहार-

हम अपने व्यवहार की सिद्धि के लिए हर समय शरीर का उपयोग करते हैं। इससे उसकी शक्ति का ह्रास होता है। शक्ति की पूर्ति, शरीर विकास, सुरक्षा एवं शक्ति संचय के लिए आहार की आवश्यकता होती है। खाया हुआ भोजन रस-रक्त आदि में परिणत होकर शरीर का भाग बनता है। पौधे के विकास के लिए जैसे खाद, भूमि पौष्टिक तत्व, धूप और जल की आवश्यकता होती है तथा जिस प्रकार के वे होते हैं, वैसा ही पौधे का रूप होता है। ऐसे ही हमारे शरीर तथा स्वास्थ्य- प्राप्य भोजन और सुविधाओं पर आश्रित हैं। अतः आयु, बुद्धि, बल, आरोग्य, सुख, प्रीति बढ़ाने वाला रुचिकर, स्निग्ध, पौष्टिक आहर ही उत्तम है।

शारीरिक विकास की दृष्टि से घृत, दुग्ध, फल, अन्न आदि खाद्य-पेय पदार्थों को अपनी पाचन शक्ति और वात-पित्त एवं कफ प्रकृति के अनुरूप ग्रहण करना

चाहिए। अच्छे पोषक तत्व विविध गुणों के भेद से प्रोटीन और ए.बी.सी. विटामिन जीवन सत्व पुकारे जाते हैं। हाँ! प्रोटीन, विटामिन, क्षार, चिकनाई, लोह, मिष्टयुक्त आहार ही सन्तुलित भोजन कहलाता है। शास्त्रों में भोजन (=अन्न) को प्राण, ब्रह्मा, ज्येष्ठ, वाज, यश, औषध, मधु, विराट कहा है जो कि आहार के महत्व को दर्शाता है। हाँ! शक्तिवर्धक, रोगनिवारक और सुपाच्य होना भोजन की तीन विशेषतायें हैं।

हाँ! हमारा भोजन कैसा हो? के उत्तर रूप में एक आख्यान प्रचलित है। जहाँ कोऽरूक्, कोऽरूक? अर्थात् कौन स्वस्थ है? का रहस्यपूर्ण उत्तर देते हुए कहा है- 'हितभुक्' मितभुक्, ऋतभुक् न रोगी स्यात्' अर्थात् अपने शरीर की प्रकृति के अनुरूप हितकर, परिमित और शुद्ध या अपने परिश्रम की सच्ची कमाई से खाने वाला रोगी नहीं होता है। अर्थात्

भोजन के सम्बन्ध में तीन बातें आवश्यक हैं। पहली बात है कि हमारा आहार शरीर के लिए हितकर- लाभ, बल, पुष्टि देने वाला हो। दूसरी बात है कि वह अपनी पाचन शक्ति के अनुरूप जितना और जैसा हम पचा सकें, वैसा हो, न कि खाते समय स्वादवश या लोभ से हम खा जायें और बाद में बिना पचे उलटी तथा दस्तों के रूप में बाहर नकल जाए। तीसरी आवश्यक बात है कि हितकर, परिमित भोजन ही हम नियमित रूप से लें। यह नहीं कि किसी दिन दस बजे खाया और किसी दिन दो बजे। विशेष कारण या अपवाद तो कभी-कभी हो सकता है।

हमारे स्वास्थ्य के विकास और संरक्षण में आहार का बहुत बड़ा हाथ है। इसीलिए भोजन के सम्बन्ध में विशेष सावधानी वर्तनी चाहिए। शरीर की पुष्टि, प्रगति के लिए जो लाभदायक हो सदा वही भोजन खाना चाहिए न कि जिह्वा के स्वाद के लिए।

अतः सुपाच्य, पौष्टिक और सन्तुलित भोजन एक सर्वगुण सम्पन्न रसायन है। ऐसा आहार औषध की तरह शरीर के बल को बढ़ाने वाला और रोग से पीड़ित के कष्ट को हटाकर दुहरे फल वाला होता है। प्राकृतिक चिकित्सा की प्रक्रिया से यह बात प्रायः सामने आती रहती है।

8. आरोग्य का दूसरा साधन- व्यायाम

प्रतिदिन हम भोजन करते हैं, वह भोज्य जब पूर्ण रूप से पच जाता है, तब उससे परिपक्व और अच्छी मात्रा में रस, रक्तादि सात धातुओं का विकास होता है। जिसकी पाचन शक्ति जितनी सुदृढ़ होती है, वह भुक्त से उतने ही अधिक पोषक तत्व प्राप्त करता है। जैसे अच्छा यन्त्र ही गन्ने से पूरा रस निकाल सकता है। इसके लिए आवश्यक है कि व्यायाम द्वारा शरीर को शक्तिशाली बनाया जाए। पौधे में जैसे खाद, पानी देने के बाद यथासमय गुडाई कर देने से ये मिट्टी में मिलकर अधिक लाभप्रद बनते हैं। उसी प्रकार व्यायाम से भुक्त पदार्थ शरीर का अंग बनकर विकास में अधिक योगदान देते हैं। दूध, दही से मक्खन निकालने के लिए मन्थन सहायक होता है, उसी प्रकार व्यायाम खाए हुए से अच्छे पोषक तत्व प्राप्त कराता है।

प्रतिदिन नियमित व्यायाम का सेवन करने से शरीर में स्फूर्ति, सौन्दर्य, उत्साह, निरालस्य और लचक रहती है। जिससे शरीर लम्बे समय तक अपना कार्य सुचारु रूप से करता है, जैसे कसी हुई खाट-देखने में सुन्दर, अधिक उपयोगी, प्रयोग में सुखप्रद, रुचिकर और चलती भी अधिक है। इसी प्रकार व्यायाम से शरीर चुस्त, सुगठित, पुष्ट, लचकीला, सुन्दर,

अधिक क्रियाशील, सुखजनक, रोगरहित और दीर्घजीवी होता है। यदि व्यायामशील व्यक्ति को अकस्मात् कोई शारीरिक कार्य करना पड़ता है तो वह सरलता से कर लेता है तथा उसके कारण उसका

शरीर कई दिनों तक श्रान्त नहीं रहता अर्थात् थकता, टूटता नहीं।

व्यायाम सदा शारीरिक शक्ति-प्रकृति और आयु के अनुरूप करना चाहिए। जहाँ व्यायाम का अभाव अहितकर है वहाँ व्यायाम का अधिक तथा विधि विरुद्ध सेवन कम हानिकारक नहीं होता है। चालीस-पचास वर्ष के पश्चात् भ्रमण, योग के दो-चार आसन या हलके खेल अधिक लाभप्रद रहते हैं। सप्ताह में एक दो बार तेल-मालिस भी सहायक रहती है।

शारीरिक स्वास्थ्य के लिए योगासन विशेष उपादेय हैं। इनसे सभी अंगों और ग्रन्थियों का बड़े व्यवस्थित ढंग से व्यायाम हो जाता है। जिसके परिणाम स्वरूप भीतरी विकारों की निवृत्ति होने से अरोग्यता के साथ आभा, प्रसन्नता की भी प्राप्ति होती है। योगासनों के साथ प्राणायाम का विशेष सम्बन्ध है। प्राण-सांसों के लेने, छोड़ने के विविध आयामों, क्रियाओं के करने को प्राणायाम कहते हैं। प्राण हमारे शरीर की भीतरी व्यवस्था एवं संचालन में विशेष महत्व रखते हैं। तभी तो कहते हैं- 'प्राण ही जीवन है और जब तक सांस तब तक आस'। क्योंकि प्राणों के प्रभाव से भुक्त आहार रस आदि के रूप में परिणत होता है तथा उस का निःसारभाग- मल नियमित रूप में बाहर आता है। शरीर के धारक तत्व जब सन्तुलित, व्यवस्थित रहते हैं, तब जीवन स्वस्थ पुष्ट और सुखी रहता है।

लेखक- आचार्य भद्रसेन
दर्शनाचार्य, होशियारपुर

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

श्री रतिराम शर्मा, श्री रामेश्वर दयालु गुप्त; गाजियाबाद, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री सुरेश चन्द्र आर्य, श्री दीनदयाल गुप्त, स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री भवानी दास आर्य, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री नारायण लाल मित्तल, श्रीमती आभा आर्या, श्रीमती शारदा गुप्ता, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, श्री सुधाकर पीयूष, आर्यसमाज गाँधीधाम, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, प्रो. आई. जे. भाटिया; नासिक, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती ओमप्रकाश वर्मा; जयपुर, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री दीपचन्द आर्य; बिजनौर, श्री खुशहालचन्द आर्य, गुप्तदान उदयपुर, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्री मोती लाल आर्य, श्री रघुनाथ मित्तल, श्री जयदेव आर्य, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, श्री नरेश कुमार राणा, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री वीरेन्द्र मित्तल, श्री विजय तायलिया, गुप्त दान दिल्ली, प्रो. आर.के.एरन, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टॉक, श्री विकास गुप्ता, श्री भारतभूषण गुप्ता, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री एम.पी. सिंह, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री विवेक बंसल, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, श्री लोकेश चन्द्र टांक, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरसेन मुखी, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, श्री राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, श्री नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़, श्री वेदप्रकाश आर्य; नई दिल्ली, श्री सत्यनारायण शर्मा; उदयपुर, श्रीमती राधा देवी-रतन लाल राजोरा; निम्बाहेड़ा, श्री सत्यप्रकाश शर्मा; उदयपुर, सुदर्शन कपूर; पंचकूला, श्री देवराज सिंह; उदयपुर, श्रीमती ललिता मेहरा; उदयपुर, श्री कृष्ण लाल डंग आर्य; हिमाचल प्रदेश, श्री जी. राजेश्वर (गौड़) आर्य; हैदराबाद, पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर, श्री बलराम जी चौहान; उदयपुर, श्री राकेश जैन; उदयपुर, श्रीमती कमलकान्ता सहगल; पंचकूला, श्री अम्बालाल सनाढ्य; उदयपुर, श्री भँवर लाल आर्य; उदयपुर, श्री वेलजी धनजी भाई; महाराष्ट्र, श्री सज्जनसिंह कोठारी; जयपुर, श्री चेतन प्रकाश आर्य; जोधपुर, ठाकुर जितेन्द्र पाल सिंह; अलीगढ़, श्री घनश्याम शर्मा; जयपुर, श्री मानसिंह चौहान; डूंगरपुर, श्री अजय कुमार गोयल; पानीपत, श्री रामजीवन मिश्र; जयपुर, श्रीमती ममता आर्या; नई दिल्ली, श्री यश आर्य; कोलकाता, श्रीमती संचिता जैन; उदयपुर, श्रीमती कुसुम गुप्ता; सूरत, डॉ. बी.पी. भटनागर; उदयपुर, डॉ. अवन्त कुमार सचेती; उदयपुर

वह बालक केवल १० वर्ष का था जो अपने पिता के साथ तलवार लेकर अपने दुश्मनों के साथ लड़ रहा था। उसके पिता पंजाब के उस समय के अनेक में से एक समूह के मुखिया थे। पंजाब के इन समूहों में आपस में लड़ाई भी होती रहती थी। परन्तु उस १० वर्ष के बालक को जिसकी एक आँख नहीं थी उसकी युद्ध शैली को देखकर लग रहा था कि यह आगे चलकर के कोई बड़ा नामचीन व्यक्ति बनेगा, और यही हुआ। इतिहास में उस बालक को हम महाराजा रणजीत सिंह के नाम से जानते हैं, जिसे शेरे पंजाब भी कहा गया। महाराजा रणजीत सिंह अतुलनीय इच्छा शक्ति के स्वामी थे। शारीरिक रूप से वह प्रायः बीमारी से घिरे रहे परन्तु उनकी तलवार की धाक ने अफगानों और अंग्रेजों की पंजाब पर विजय प्राप्त करने की चाह को कुचल के रख रखा था। यह पहले व्यक्ति थे जिन्होंने अफगानों के घरों के ऊपर भारतीय ध्वज लहराया। अंग्रेज लोग कितने भी मजबूत रहे हों परन्तु कभी भी रणजीत सिंह के साम्राज्य में घुसने की हिम्मत नहीं कर पाए।

रणजीत सिंह का जन्म सन् १७८० में गुजरांवाला (अब पाकिस्तान) महाराजा महासिंह के घर हुआ था। उन दिनों पंजाब पर सिख और अफ़ग़ानों का राज चलता था जिन्होंने पूरे इलाके को कई मिसलों में बाँट रखा था। इनमें आपस में लड़ाई होती रहती थी। कई बार राजनीति अनेक सम्बन्ध बनाने पर मजबूर कर देती है। रणजीत सिंह के पिता के समूह ने जिस दूसरे समूह के मुखिया को मारा उसी मुखिया की विधवा ने राजनीतिक सन्धि करना ज्यादा पसन्द किया।

फलस्वरुप उसकी बेटी का विवाह रणजीत सिंह के साथ किया गया। रणजीत सिंह की सासू माँ सदाकौर सदैव उनकी अभिभावक बनी रही परन्तु नाना षड्यंत्रों की प्रणेता भी रहीं। अन्ततोगत्वा रणजीत सिंह ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया, जिसे अंग्रेजों ने कूटनीति के तहत छुड़ाया।

१२ अप्रैल १८०१ को रणजीत सिंह ने महाराजा की उपाधि ग्रहण की। गुरु नानक जी के एक वंशज ने उनकी ताजपोशी सम्पन्न कराई। उन्होंने लाहौर को अपनी राजधानी बनाया।

रणजीत सिंह ने पहली आधुनिक भारतीय सेना जिसे सिख खालसा सेना कहा जाता था, गठित की और अफ़गानों के खिलाफ कई लड़ाईयाँ लड़ीं। पेशावर से लेकर पश्चिम क्षेत्र पर उनका अधिकार हो गया। यह पहला अवसर था जब अफगानों पर किसी गैर मुस्लिम ने राज्य किया हो। रणजीत सिंह ने पेशावर और जम्मू कश्मीर तथा आनन्दपुर पर भी अपना अधिकार कर लिया। यह अब एक ऐसा शक्तिशाली साम्राज्य था जिससे टकराने में ब्रिटिश भी डरते थे।

यद्यपि रणजीत सिंह अनपढ़ थे परन्तु उन्होंने अपने राज्य में शिक्षा और कला को बढ़ाया। कानून की बात करें तो उन्होंने अपने राज्य में कभी किसी को मृत्युदण्ड नहीं दिया।

रणजीत सिंह धार्मिक तथा दानी प्रकृति के थे। उन्होंने अमृतसर के हरमन्दिर साहिब गुरुद्वारे में संगमरमर लगवाया और सोना चढ़वाया तभी से उसे स्वर्ण मन्दिर कहे जाने लगा। सन १८३५ में महाराजा रणजीत सिंह ने काशी विश्वनाथ मन्दिर को एक टन सोना दान किया जिससे उसके ऊपरी भाग पर स्वर्णपत्र जड़ा गया।

महाराजा रणजीत सिंह ने शाह शुजा से कोहिनूर

हीरा प्राप्त किया। यही वह कोहिनूर हीरा है जिसका नाम आपने बहुत सुना होगा।

उनका निधन १८३९ में हुआ। उसके बाद अंग्रेजों ने पंजाब पर शिकंजा कसना शुरू कर दिया और अंग्रेज और सिखों के बीच में जो युद्ध हुआ उसके बाद ३० मार्च १८४९ को पंजाब को ब्रिटिश साम्राज्य का अंग बना लिया गया और रणजीत सिंह के खजाने का अनमोल हीरा कोहिनूर ब्रिटेन की महारानी विक्टोरिया को प्रस्तुत कर दिया गया। महाराजा रणजीत सिंह के निधन पर उनके अल्पवयस्क पुत्र दिलीप सिंह को राजा बनाया गया। जिसे अंग्रेजों ने अपनी माँ जिदान कौर से अलग कर एक दम्पति की देख-रेख में रखा। महारानी विक्टोरिया ने दिलीप सिंह को ब्रिटेन बुलाया परन्तु कालक्रम के चलते अनेक घटनाओं के उपरान्त दिलीप सिंह का पैरिस के एक मामूली होटल में निधन हो गया और इस प्रकार शेरे पंजाब की विरासत का अन्त हो गया।

नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र
गुलाब बाग, उदयपुर

सत्यार्थ मित्र बनें

न्यास के कार्यों को गति प्रदान करने के लिए 5100 रु. (पाँच हजार एक सौ) वार्षिक का सहयोग प्रदान करें।

आपका मात्र ५१०० रुपये वार्षिक का सहयोग न्यास के कार्य को अद्वितीय गति प्रदान कर सकता है।

हमारे अत्यन्त आत्मीय बन्धुजन!

इस अपील को मेरी व्यक्तिगत अपील कहिए अथवा न्यास की अपील समझिए। यह आप तक पहुँचे और आपकी आत्मीयता हमें प्राप्त हो, इसी नाते हम प्रथम बार अर्थ सहयोग का निवेदन कर रहे हैं।

आपको यह जानकारी होगी ही कि नवीन, आकर्षक प्रकल्पों का निर्माण कर न्यास सहस्रों लोगों तक वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्वों को अग्रप्रसारित कर रहा है। सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर द्वारा आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा में वेद, वेद के प्रादुर्भाव, भारतीय ऋषियों के योगदान, योगिराज श्री कृष्ण और भगवान राम के पावन जीवन–चरित्र, मेवाड़ की माटी के गौरव महाराणा प्रताप, आर्यसमाज के रत्नों, भारत को स्वतन्त्रता दिलाने वाले क्रान्तिकारियों, सत्यार्थ प्रकाश चित्रावली एवं महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र के माध्यम से व संस्कार वीथिका के माध्यम से मानव निर्माण की पूरी योजना आगन्तुकों के सामने रखी जा रही है। इस क्रम में मानों महर्षिवर की संस्कार विधि मूर्तरूप में चित्रित हो गयी है।

वहीं उच्चतम गुणवत्ता के 3D थियेटर का निर्माण कर महापुरुषों के जीवन–चरित्र का दिग्दर्शन भी कराया जा रहा है। यहाँ यह अंकित करना आवश्यक है कि मुक्त हस्त से दिए हुए उदार अर्थ के सहयोग से भव्य संस्कार वीथिका परिसर व थियेटर का निर्माण माननीय सुरेश चन्द्र जी आर्य; अहमदाबाद और माननीय दीनदयाल जी गुप्त; कोलकाता के पवित्र सहयोग से हो पाया है एवं संस्कारों का निर्माण आर्यजनों के सामूहिक सहयोग से एकत्रित धन से हुआ है। परन्तु इनको गति देने के लिए, वर्ष में सारे प्रकल्प 365 दिन गतिशील रहें, इसके लिए आवश्यक है कि कुछ लोग आगे आएँ और प्रतिवर्ष अपना योगदान दें, इसीलिए आपसे यह निवेदन कर रहा हूँ। **मैं व्यक्तिगत रुप से अनुगृहीत होऊँगा अगर आप मात्र 5100 सौ रुपये प्रतिवर्ष देने का संकल्प लेंगे।** न्यास का एकाउन्ट नम्बर भी नीचे अंकित है। न्यास को प्रदत्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है।

हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि आप हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर 5100 रुपये वार्षिक का यह अर्थ सहयोग प्रदान करने की कृपा करेंगे। **निश्चित मानिये आपके सहयोग से जो ऊर्जा और गति हमें मिलेगी वह लाखों लोगों तक वैदिक संस्कृति के उदात्त मूल्यों को सम्प्रेषित करने में मील का पत्थर साबित होगी।**

निवेदक- अशोक आर्य, अध्यक्ष-न्यास

चैक श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, मेन ब्रांच, दिल्ली गेट, उदयपुर बैंक एकाउन्ट का विवरण : AC. No. : 310102010041518, IFSC CODE- UBIN 0531014, MICR CODE- 313026001 में जमा करा कृपया सूचित करें।

पत्रिका से सम्बन्धित किसी प्रकार की जानकारी/शिकायत के लिये निम्न चलभाष पर सम्पर्क करें। 09314535379

पाठकों के पास 'सत्यार्थ सौरभ' डाक विभाग की अव्यवस्था के कारण अनेक बार समय पर नहीं पहुँच पाती है। पाठक न्यास को ही दोषी मानते हैं, जिसे अनुचित भी नहीं कहा जा सकता। परन्तु वास्तविकता है कि यहाँ से प्रत्येक माह की 7 तारीख को पत्रिका प्रेषित कर दी जाती है। पश्चात् सब कुछ डाक विभाग की कृपा पर निर्भर करता है। फिर भी आपसे निवेदन है कि प्रत्येक माह की 20 तारीख तक भी पत्रिका न मिलने पर कृपया इसी चलभाष पर सम्पर्क करें।

-सम्पादक

प्रभु-मिलन का साधन

सन्ध्या

-स्व. श्री महात्मा हंसराज जी

{महात्मा हंसराज जी असाधारण विद्वान् और सुयोग्य लेखक थे। उनके प्रेरक प्रवचनों में से पाठकों के लाभार्थ यह प्रवचन प्रस्तुत है।}

'सन्ध्या' संस्कृत के दो शब्दों 'सम्' और 'ध्या' से बना है। 'सम्' का अर्थ है अच्छा और 'ध्या' का अर्थ है ध्यान, इसलिए सन्ध्या से तात्पर्य वे मन्त्र हैं, जिनके द्वारा परमात्मा का भली प्रकार से ध्यान किया जाये, तथा हम हृदय की सरलता व प्रेम एवं आत्मा के दृढ़ विश्वास के साथ उनके चरणों में वास करते हुए उनसे प्रार्थना कर सकें। वास्तव में तो वेद का प्रत्येक मन्त्र सन्ध्या में, अथवा ब्रह्म यज्ञ में, जो सन्ध्या का दूसरा नाम है, आ सकता है, परन्तु ऋषि लोगों ने दिव्य दृष्टि तथा परम सूक्ष्म बुद्धि से उन्नीस मन्त्रों को चुनकर उनको एक स्थान पर एकत्रित कर दिया है। यह मन्त्र समूह तथा इनका क्रम इस प्रकार से रखा गया है कि आत्मा के उच्च-से-उच्च भाव उनके द्वारा तुष्ट हो सकते हैं तथा इनकी सहायता से हम अपने परमपिता और जगत्-धर्त्ता से मिलाप पैदा कर सकते हैं।

सन्ध्या दो काल क्यों? वैसे तो प्रत्येक क्षण जो परमात्मा के स्मरण में व्यतीत हो, बड़े पुण्यों का फल है; यदि मनुष्य का एक-एक रोम जिह्वा बन जाये तथा उसकी आयु सहस्रों वर्षों की हो, तो भी परमात्मा के भजनरूपी ऋण को चुका नहीं सकता; तथापि ब्रह्मचर्य तथा गृहस्थ के अन्य कर्त्तव्यों को आवश्यक समझकर, मनुष्य की धर्मशक्ति को परिमित अनुभव करके, ऋषियों ने सन्ध्या के लिए दो काल नियत किये हैं, जिनमें सन्ध्या करना आवश्यक धर्म है। ये दोनों समय सन्धि समय के हैं अर्थात् जिस समय दिन तथा रात्रि का मिलाप होता है, वही समय परमात्मा की स्तुति, प्रार्थना और उपासना का है। यह मिलाप दो कालों में होता है, प्रातः काल जब नक्षत्र अस्त होने लगें, उस समय से सूर्योदय तक, तथा सायंकाल सूर्य के अस्त होने के समय से नक्षत्रों के उदय होने तक। इन दो कालों में सब काम छोड़ देने चाहिए न भ्रमण, न व्यसन, न व्यवहार तथा न वार्तालाप, सब के सब बन्द रहें; यह समय केवल परमात्मा के स्मरण का समय है, इसी कार्य के लिए इसे लगाना चाहिए। इन समयों को नियत करते हुए ऋषियों ने बड़ी सूक्ष्म बुद्धि से कार्य लिया है। प्रथम तो ये काल ही ऐसे हैं कि इनमें स्वाभाविक रीति से मन शान्त होता है। प्रकृति की निराली छटा, अद्भुत दृश्य हमारे नयनों के सम्मुख आकर स्वयं ही बहुरंगी (विविध रूपों में भासमान) परमात्मा से मिलने की इच्छा उत्पन्न कर देते हैं, और द्वितीय, इस नियत समय को जाँचने के लिए धनी व दरिद्र, राजा तथा रंक सबको एक समान आसानी है । घड़ियों तथा क्लॉकों को क्रय करने की आवश्यकता नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति, भले ही कितना निर्धन क्यों न हो, यदि उसके अन्दर भाव हैं, तो समय पर अपने स्वामी को स्मरण कर सकता। समय को नियत करना भी एक आवश्यक बात है।

हमारे जीवन में एक समय के लिए एक आवश्यक कार्य होना चाहिए, और प्रत्येक आवश्यक कार्य के लिए कोई समय नियत होना चाहिए। नियत समय पर जो कार्य हो, वह हृदय से किया जा सकता है तथा उसको करने की इच्छा स्वतः ही मन में उत्पन्न होती है। जिस प्रकार भोजन का समय सदा के लिए नियत करने से निश्चत समय पर भूख लग जाती है, तथा दिल भी चाहता है कि भोजन करें, इसी प्रकार नियत समय के होने से सन्ध्या करने के लिए भी स्वतः ही हमारे मन में इच्छा

होगी। यदि इन समयों को नियत न करें, तो प्रमाद का भय रहेगा तथा हम अपने व्रत से पतित हो जायेंगे। इसलिए उपासक के लिए आवश्यक है कि समय का ध्यान रखे तथा नियत समय पर सन्ध्या की चेष्टा करे। जिस दिन नियत समय पर किसी विशेष कारण से ईश्वर स्मरण न कर सके, उस दिन को अपनी हानि का कारण समझे तथा इस हानि को न्यून करने के लिए दूसरे समय पर सन्ध्यावन्दन करे, परन्तु ऐसा कभी न हो कि दिन और रात परमात्मा का नाम लिये बिना ही बीत जाये। इस विषय में प्रमाद करने से बड़ा पाप होता है।

स्थान कैसा हो? सन्ध्या का स्थान निर्जन होना चाहिए। अच्छा तो यह है कि प्रातःकाल ही उठकर हम किसी नदी के तट पर चले जायें। आवश्यक कृत्यों से निवृत्त होकर वहाँ के किसी शुद्ध स्थल पर, जहाँ स्त्री-पुरुषों की आवाज़ें हम तक न पहुँचें, सन्ध्या के लिए अपना आसन लगा लें और सन्ध्या के समय को परमात्मा के स्मरण में व्यतीत करें। वहाँ शुद्ध जल के सम्मुख बैठें। जंगल के जल से सिचिंत प्राणशक्तिवर्धक, सुगन्धित निर्मल वायु के पान से हमारे शरीर में आरोग्यता तथा आत्मा में पुरुषार्थ उत्पन्न होगा, परन्तु काल के प्रभाव से लोगों के अन्दर सर्दी तथा गर्मी के सहन की शक्ति न्यून होने से तथा नदियों के किनारों पर राज्य के अथवा श्रीमानों के ध्यान के अभाव में उपयुक्त साधन न होने के कारण, नदियों के तट पर प्रायः वह निर्जनता नहीं होती, जिसके बिना ध्यान का लगाना बड़ा कठिन है। अतः ये साधन उपलब्ध नहीं हैं, तो अपने घरों में अथवा आर्य समाज के मन्दिरों में अपने इस नित्य कर्त्तव्य में अथवा किसी ऐसे स्थान पर, जहाँ शान्ति विद्यमान हो, का पालन करना चाहिये। परन्तु ध्यान रहे, किसी अच्छे स्थान के अभाव में यह अच्छा है कि सन्ध्या को बुरे स्थान पर बैठकर भी कर लिया जाये। सन्ध्या न करने की अपेक्षा ऐसा करना अच्छा है, क्योंकि नित्यकर्म करना श्वास और प्रश्वास के समान है; जैसे ये बन्द नहीं हो सकते, इसी प्रकार से नित्यकर्म में भी छूट नहीं हो सकती ।

मन के भीतर

निर्जन स्थान में नियत समय पर जब हम सन्ध्या करने के लिए बैठेंगे, तब हमें अनुभव होगा कि हम एक कठिन कार्य में प्रवृत्त हुए हैं। हमारे अन्दर प्रेम तथा सद्भाव के अंकुर विद्यमान हैं, परन्तु जो हमारे अपने आत्मपुत्र, हमसे जन्म लेनेवाले मन के अन्दर असुर विराजमान हैं, वे इन दिव्य शक्तियों को छिन्न-भिन्न कर उनके स्थान पर अपना बल-स्थापन करने के लिए उद्यत हैं। हम अपने भीतर प्रेम देखना चाहते हैं, उसके स्थान पर राग-द्वेष के दूत दर्शन देते हैं! हम शान्ति के इच्छुक हैं, और क्रोध का भयंकर रूप हमारे सामने आ खड़ा होता है! हम धर्म की याचना करते हैं, उसके स्थान पर काम और उसके विषय मोहिनी स्वरूप धारण करके हमारे मन को आकर्षित कर लेते हैं! यहाँ तक कि परमात्मा, परलोक, पुनर्जन्म तथा मोक्ष पर संशय उत्पन्न होकर हृदय को घेर लेते हैं! दिल में आता है कि सन्ध्या, प्रार्थना और उपासना के सारे बखेड़े लपेटकर आनन्द लाभ करें इतने में यह विचार उत्पन्न होता है कि आनन्द कहाँ?

आनन्द-पद को तजकर राग-द्वेष, काम-क्रोध तथा विषयों की सेना के भीतर रहकर किसने सुख तथा शान्ति को प्राप्त किया है? ये राक्षस तो सुख तथा शान्ति के शत्रु हैं, न कि उनके दान करनेवाले। जिन ऋषियों तथा महात्माओं ने श्रेयस का मार्ग लिया है, उन्होंने तो इन दैत्यों के साथ युद्ध किया है, इनके साथ सन्धि नहीं गाँठी है। फिर सुख शान्ति भी तो तुच्छ पदार्थ हैं उस महान् कर्त्तव्य के सामने जो हमारा वेद-कर्त्ता, जगत्-विधाता परमात्मा की ओर है। वह तो हमारे पिता हैं, उन्होंने हमें जन्म दिया है। वह हमारी माता हैं, क्योंकि उनके प्रेम की दृष्टि दिन और रात हमारी रक्षा करती है। वह तो हमारे भ्राता हैं, उन्हीं के भुजबल से हम इस संसार के संग्राम में विजय प्राप्त करते हैं, नहीं-नहीं, वह हमारे सखा हैं, हमारी तुष्टि और हमारे जीवन में प्रेम, आनन्द तथा स्नेह का माधुर्य प्रदान करते हैं। मित्र का स्वरूप धारण किये हुए सदा हमारे शरीररूपी रथ के नेता बने हुए अंग संग वर्तमान हैं। बाहर की सृष्टि की ओर जब दृष्टि डालते हैं तो प्रतीत होता है कि यह हमारे इष्ट मित्र इस लोक के एकमात्र पति तथा पृथ्वी और द्यौ के एकमात्र सहारा हैं। उन्होंने असंख्य सूर्यमण्डलों को उत्पन्न करके अपने

पैरों पर टिका रखा है। वह इस ब्रह्माण्ड के पति, राजा और शासनकर्त्ता हैं। न वहाँ तक सूर्य की पहुँच है, न चाँद और सितारों की गति है। अग्नि में इतनी शक्ति कहाँ कि वहाँ तक देख भी सके!

हम निर्बल जीवात्मा ऐसे अनन्त तथा सर्वशक्तिमान् सम्राट् के राज्य में वास करते हुए सब प्रकार के सुख-आनन्द भोगते हैं । क्या हमारा यह कर्त्तव्य नहीं कि हम अपने राजा की महिमा का चिन्तन कर अपने स्वामी के गुणों को गायें तथा अपने माता- पिता एवं मित्र से मिलने की चिन्ता करें? धिक्कार है हमारे जीवन पर यदि हम परमात्मा के चरणों में बैठने का यत्न न करें।

प्रभु मिलन की विधि : हमारे जैसा कौन कृतघ्न होगा, यदि हम उनको भूल जायें जो श्वास-प्रश्वास में हमें स्मरण करता है! इस विचार से बलवान् होकर आत्मा का आलस्य दूर हो जाता है, मन की निर्बलता भाग जाती है, राक्षस तथा दैत्य (भाव) भी कुछ समय के लिए परे हो जाते हैं, हृदय में शान्ति तथा उत्साह विराजमान होते हैं ।

अब प्राणायाम करो, और भी चित्त निर्मल होगा। इस प्राप्त भूमि को स्थिर रखने के लिए बार-बार प्रयत्न करो, यही अभ्यास है। चित्त की शुद्धता तथा परमात्मा के योग की तुलना में विषयों के सुख को तुच्छ समझो, यही वैराग्य है। इन दोनों साधनों से अपने भीतर और बल ग्रहण करो तथा प्रभु की अनन्य भक्ति के अधिक योग्य बनो। इस प्रकार चित्त को रिक्त करके निर्मल परमात्मा का ध्यान करो, यही पूजन की विधि है।

वह (प्रभु) संसार के पुष्प एवं जल-धन के इच्छुक नहीं हैं। संसार के बाह्य आडम्बर उनको प्रसन्न नहीं कर सकते। उनकी सच्ची प्रसन्नता तो उस पर है, जो अपने हृदय को एक छोटे बालक के समान शुद्ध तथा निर्मल बनाकर केवल उन्हीं का आश्रय लेता हुआ उनके चरणों में विराजमान होता है। अतः सब आडम्बरों को तज दो! केवल चित्त की सरलता और प्रसाद (प्रभु कृपा) रूपी पुष्प लेकर उससे प्रभु-पूजन में प्रवृत्त हो जाओ! जो कुछ दिल में हो, वह निर्भय होकर कहो और फिर सब कुछ ईश्वरेच्छा पर छोड़ दो। वह अवश्य हमको सुनेंगे तथा अपनी ज्योति से हमारा पथप्रदर्शन करेंगे।

'सन्ध्या' से पाप-बन्धन कटते हैं : सन्ध्या स्वयं एक शस्त्र है और बड़ा शस्त्र है। जैसे सूर्य की रश्मियों से रात्रि की सेनाएँ स्वयं ही छिन्न-भिन्न हो जाती हैं, उसी प्रकार पाप के दल इस शस्त्र के सामने नष्ट-भ्रष्ट हो जाते हैं। इन मन्त्रों की अद्भुत शक्ति से, इनके अर्थों पर विचार करने से जीवन के आदर्श उच्च हो जाते हैं। आत्मा की शक्तियाँ विकसित होती हैं। पाप की रुचि कम होती जाती है। ईश्वर से प्रेम बढ़ता है और सच्ची रहनुमाई (सन्मार्ग दर्शन) हासिल होती है। सन्ध्या को सफल करने के लिए इन सब बातों की आवश्यकता है, परन्तु ये सब बातें भी सन्ध्या से उत्पन्न होती हैं। इन पदार्थों से बढ़कर जीवात्मा परमात्मा के दर्शन करके अमृत बनती है तथा पाप के बन्धनों को तोड़कर मोक्षधाम को प्राप्त होती है।

स्वाध्याय की महिमा- शतपथ ब्राह्मण में लिखा हैं कि इस सारी पृथ्वी को धन से भरकर दान देने से जो फल प्राप्त होता है, उससे तिगुना, अथवा उससे बढ़कर, किंवा अनन्त फल उसको प्राप्त होता है, जो ठीक-ठीक जानता हुआ प्रतिदिन स्वाध्याय करता है। अतः स्वाध्याय करना चाहिए। अन्यत्र भी वही ऋषि कहते हैं- इस पृथ्वी तथा द्यौ में जितने श्रम के कार्य हैं, उनकी पराकाष्ठा स्वाध्याय है, उस व्यक्ति के लिए, जो समझकर स्वाध्याय करता है। अतः स्वाध्याय भली प्रकार करना चाहिए।

सन्ध्या ब्रह्मास्त्र है

प्रिय पाठको! इस परम शस्त्र को धारण करो। अपनी आत्मा के वैरियों से युद्ध करके अपने आत्मा के अन्दर सुख-आनन्द का राज्य (स्थापित) करो। इस परम औषधि की कृपा से आपके मल दूर होंगे तथा आपका चित्त निर्मल होगा। चित्त के प्रसाद से आप परमात्मा के दर्शन (के) योग्य बनोगे। आपको धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष की सिद्धि प्राप्त होगी।

साभार- पूज्य महात्मा हंसराज जी के प्रेरक प्रवचन

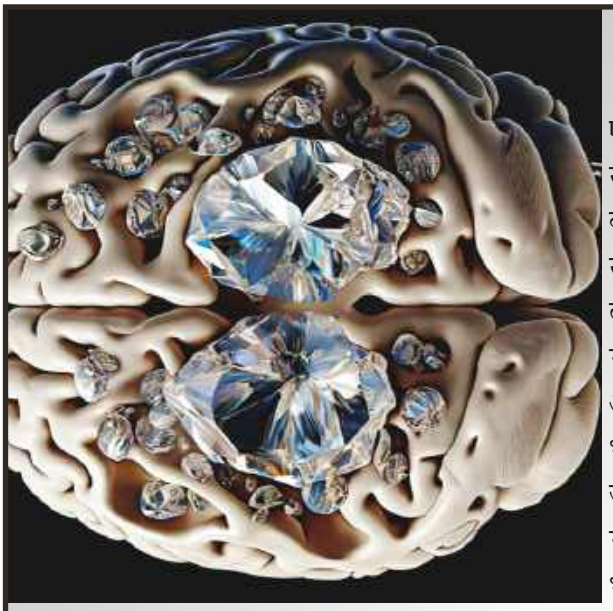

लालच का जाल

एक बार एक सम्पन्न राज्य के राजा के पास एक साधु आए। राजा ने पूछा- 'आपकी क्या सेवा करूँ?'

साधु बोले- 'महाराज! कृपया इस पात्र को भरवा दीजिए।'

राजा बोला- 'महात्मा जी! इस छोटे-से पात्र को अभी अमूल्य हीरे-जवाहरात व सोने-चाँदी से भरवा देता हूँ ताकि शेष जीवन आपको धन की जरूरत ही न पड़े।'

राजा का आदेश पाते ही कोषाध्यक्ष ने उस पात्र को भरना शुरू कर दिया। लेकिन वह भर नहीं पा रहा था। देखते ही देखते सारा राजकोष खाली हो गया। राजा ने पूछा- 'महात्मा जी! यह बर्तन किस धातु का बना है? सारा राजकोष खाली हो गया है। लेकिन यह भर ही नहीं रहा।'

साधु बोले- 'यह मनुष्य की खोपड़ी की हड्डी से बना हुआ है। इस कपाल की लिप्सा कभी पूरी नहीं होती।'

यह सुनते ही राजा चौंक पड़े और उन्होंने विनम्रता-पूर्वक कहा- 'आपकी बात सुनकर मेरी उत्सुकता बढ़ गई है। कृपया विस्तार से बताएँ।'

साधु ने समझाया- 'राजन्! तृष्णा एक ऐसा गहरा घड़ा है जिसे सम्पूर्ण पृथ्वी के हीरों आदि से भी नहीं भरा जा सकता है। यह तृष्णा मनुष्य को बन्दर की तरह नाच नचाती है, कुत्ते की भाँति दर-दर भटकाती है, उल्लू के समान सूरज के प्रकाश में भी अन्धा बना देता है और मछली की तरह लोभ में फंसा कर जीवन को संकट में डाल देती है। तृष्णा के अनेक रूपों का शब्दों में वर्णन करना मेरी सीमा से बाहर है।' यह सुनते ही अचानक राजा की नींद खुल गई। उसके सपने ने एक बड़ी सीख दी।

इसलिए भतृहरि महाराज ने सुभाषित में कहा है-

भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ता,
तपो न तप्तं वयमेव तप्ताः।
कालो न यातो वयमेव याता,
तृष्णा न जीर्णाः वयमेव जीर्णाः॥

प्रस्तुति- भाग्यश्री शर्मा
उदयपुर

दान की अपील

सत्यार्थ प्रकाश रचना स्थली नवलखा महल से NMCC के रूप में सत्यार्थ शिक्षाओं को जिस अद्भुत प्रकार से प्रसारित किया जा रहा है और सहस्रों लोग आकर्षित हो इसका लाभ ले रहे हैं जिस कारण से यह स्थल अब विख्यात होता जा रहा है। आपसे प्रार्थना है कि इस यज्ञ में अपनी छोटी-बड़ी आहुति अवश्य देने की कृपा करें। इस हेतु साथ में दिए यूपीआई कोड का भी आप इस्तेमाल कर सकते हैं। बस एक अनुरोध है कि अगर आप अर्थ सहयोग प्रदान करें तो चलभाष 9314235101, 7976271159 अथवा 9314535379 पर सूचित अवश्य करें।

G Pay
BHIM UPI

आयुर्वेद की एक अनुपम औषधि – सिद्ध मकरध्वज

संसार की किसी भी पैथी में सिद्धमकरध्वज के मुकाबले की कोई दवा नहीं है। यह अत्यन्त शक्तिवर्धक, रोग प्रतिकार शक्ति वर्धक एवं अनुपालन भेद से प्रायः सभी रोगों में लाभप्रद है। सिद्धमकरध्वज के निरन्तर सेवन से बुढ़ापा एवं अकाल मृत्यु का नाश होता है। यह क्षय रोग को नष्ट करता है। भयंकर दुःखदायी खांसी को मिटाता है। सम्पूर्ण प्रमेहनाशक है। सब प्रकार के ज्वर, मन्दाग्नि, अरुचि तथा प्रायः सभी प्रकार के रोग अनुपान भेद से इसके सेवन करने से नष्ट होते हैं। हृदय रोग की भयंकर स्थिति में इसका प्रयोग किया जाता है। यह कमजोरी, श्वास फूलना एवं हृदय की गड़बड़ी में निश्चित रूप से फायदा पहुँचाता है। इसको अधिकतर लोग अन्तिम समय में प्रयोग करते हैं। इसका अभिप्राय यह नहीं कि इसे अन्तिम समय में ही प्रयोग करना चाहिए। इसे ऐसे समय में इसलिए प्रयोग किया जाता है कि इससे अधिक शक्तिदायक औषधि हृदय के लिए दूसरी नहीं है। अतएव इसे सदैव ही विभिन्न रोगों को नष्ट करने के लिए प्रयोग में लाना चाहिए।

लम्बी बीमारी के बाद जब रोगी अत्यन्त दुर्बल हो तब इसका सेवन अवश्य करना चाहिए। यह औषधि बालक, वृद्ध, युवा एवं गर्भिणी स्त्री आदि सभी प्रकार रोगियों लिए लाभदायक है। जिन व्यक्तियों में पौरुष शक्ति की कमी है या नष्ट हो चुकी है उन्हें इसका सेवन करके अपने जीवन को स्वस्थ एवं प्रसन्न बनाना चाहिए। आयुवृद्धि के लिए भी इसका प्रयोग रसायन के रूप में किया जाता है।

मात्रा एवं सेवन विधि–

१०० मि. ग्राम सिद्ध मकरध्वज को उत्तम पत्थर की खरल में डालकर ५ मिनट तक खूब घुटाई करें। इसके बाद ३ ग्राम शहद डालकर १०-१५ मिनट तक फिर घुटाई करें। क्योंकि शहद में मकरध्वज की अच्छी तरह घुटाई न होने पर इसका पूरा लाभ नहीं मिलता है। फिर जिस रोग के लिए रोगी को देना हो उस रोगनाशक औषधियों का रस या चूर्ण मिलाकर रोगी को खिला देना चाहिए। चूर्ण मिलाने पर शहद १०-१५ ग्राम मिलावें।

रोगानुसार अनुपान–

1. साधारण ज्वर में- सिद्धमकरध्वज १०० मि. ग्रा.+अदरक का रस १० ग्राम+शहद १० ग्राम के साथ देवें।

2. विषम ज्वर में- सिद्ध मकरध्वज १०० मि. ग्रा. +करंज बिज चूर्ण १ ग्राम+शहद से देवें।

3.जीर्ण ज्वर में- मकरध्वज १०० मि.ग्रा.+पीपल चूर्ण १ ग्राम+शहद के साथ देवें।

4. अतिसार में- सिद्ध मकरध्वज १०० मि.ग्रा.+ सफेद जीरे का चूर्ण १ ग्राम+शहद ३ ग्राम के साथ देवें।

5. अजीर्ण में- मकरध्वज १०० मि. ग्रा. +शंखभस्म २५० मि. ग्रा.+त्रिकुट ५०० मि. ग्रा. +शहद मिलाकर देवें, ऊपर से अर्क अजवायन ३०० मिली लिटर पिलावें।

6. हैजा में- मकरध्वज १०० मि. ग्रा.+ प्याज का रस १२ ग्राम+शहद ३ ग्राम मिलाकर पिलावें।

7. अर्श (बवासीर में)- मकरध्वज १०० मि. ग्रा. +जमीकन्द का चूर्ण १ ग्राम+मिश्री ६ ग्राम के साथ देवें।

8. पाण्डू रोग (पीलिया) में- मकरध्वज १०० मि. ग्रा+कुटकी चूर्ण ३ ग्राम+शहद से देवें।

9. राजयक्ष्मा में- मकरध्वज २०० मि. ग्रा. +प्रवाल भस्म २०० मि. ग्रा.+सितोपलादि चूर्ण ३ ग्राम+शहद के साथ देने से राजयक्ष्मा (टी.बी.) दूर होता है।

10. श्वास रोग में- मकरध्वज १०० मि. ग्रा.+ अडूसे की छाल का रस १२ ग्राम+शहद से देवें।

11. स्वरभंग में- मकरध्वज १०० मि. ग्रा.+ बच का चूर्ण १ ग्राम+शहद से देवें।

12. अपस्मार (मिर्गी में)- मकरध्वज १०० मि. ग्रा.+बच का चूर्ण १ ग्राम+ब्राह्मी स्वरस १२ ग्राम+शहद से देवें।

13. आमवात में- मकरध्वज १०० मि. ग्रा.+सौंठ का चूर्ण १.५ ग्राम+शहद से देवें। ऊपर से महारास्नादि क्वाथ २५ मिली लिटर (गुग्गुल युक्त) समभाग जल से देवें।

14. हृदय रोग में- मकरध्वज ७५ मि. ग्रा. +मोती पिष्टी ७५ मि. ग्रा.+अर्जुन छाल का चूर्ण ३ ग्राम+शहद से देवें,

15. शीघ्र पतन में- मकरध्वज १०० मि. ग्रा. +अश्वगंधा चूर्ण २ ग्राम+शहद के साथ दें।

16. मधुमेह में- मकरध्वज १०० मि. ग्रा. +जामुन की गुठली का चूर्ण २ ग्राम+शहद के साथ देने से शीघ्र लाभप्रद है।

17. श्वेत प्रदर में- मकरध्वज १०० मि. ग्रा.+ पुष्यानुग पूर्ण २ ग्राम+चावल के धोवन का पानी ३० मिली लीटर+शहद से देवें।

18. पथरी में- मकरध्वज १०० मि. ग्रा.+कुलथी का क्वाथ ३० मिली लीटर+शहद से देवें।

19. रक्ताल्पता में- मकरध्वज १०० मि. ग्रा. +लौहभस्म २०० मि. ग्रा.+शहद से देवें।

20. शोथ रोग में- मकरध्वज १०० मि. ग्रा.+ पुनर्नवा स्वरस १२ ग्राम+शहद के साथ देवें।

इसी प्रकार अन्य बहुत से रोगों में अनुपालन भेद से अपने चिकित्सक की सलाह से प्रयोग कर सकते हैं। सिद्धमकरध्वज स्वर्णयुक्त के स्थान पर अल्प क्रय शक्ति वाले लोग सामान्य मकरध्वज का प्रयोग कर लाभ प्राप्त करें।

लेखक- वेदमित्र आर्य
सेवानिवृत्त आयुर्वेदिक चिकित्सक
१३ श्री राम नगर, से.-६
हिरणमगरी, उदयपुर

सत्यार्थ सौरभ की रजिस्टर्ड पोस्टल सेवा

सत्यार्थ सौरभ के सम्मानित सदस्यगण! हमें पता है कि आप लोगों को सत्यार्थ सौरभ पत्रिका या तो समय से नहीं मिलती है या फिर मिलती ही नहीं है। इसलिए न्यास ने एक निर्णय लिया है कि अगर आप एक वर्ष में रुपये 264/- (Postage हेतु) देते हैं तो आपको पत्रिका रजिस्टर्ड भेजी जाएगी। ताकि फिर भी पत्रिका प्राप्त नहीं होती है तो आप पोस्ट ऑफीस में शिकायत दर्ज करवा सकते हैं जिससे ये समस्या सुलझ सकती है।

कहानी दयानन्द की

कथा सरित

महर्षि दयानन्द जी के सम्पर्क में आकर के अमीचन्द जी का जीवन किस प्रकार से परिवर्तित हो गया इस घटना के बारे में तो प्रायः सभी परिचित है, परन्तु प्रयाग के माधव बाबू का जीवन परिवर्तन का इतिहास भी कम रोचक और प्रेरक नहीं है। माधव चन्द्र चक्रवर्ती बंगाली सज्जन थे। पीडब्ल्यूडी में ओवरसियर थे और अतिरिक्त साधनों से भी उन्होंने खूब काम धन कमाया था। अंग्रेजी फारसी के ज्ञाता थे। सबसे बड़ी बात थी कि वह अपने आप को बड़ा तार्किक समझते थे और कहा करते थे कि मेरे तर्कों का कोई खंडन नहीं कर सकता। उन्होंने १०१ प्रश्न लिख रखे थे और जब भी कोई प्रसिद्ध धर्मोपदेशक प्रयाग में आता था इन प्रश्नों के उत्तर पूछते थे और उनको निरुत्तर करके चले जाते। श्री देवेन्द्र नाथ ठाकुर से भी उन्होंने वही प्रश्न पूछे परन्तु उनके उत्तरों से माधव बाबू को संतोष नहीं हुआ। माधव बाबू पूरी तौर पर नास्तिक हो चुके थे और आचार व्यवहार की मर्यादाओं को भी उन्होंने तिलांजलि दे रखी थी।

जब स्वामी जी महाराज वहाँ आए तो बड़े गर्व के साथ अपने १०१ प्रश्न लेकर माधव बाबू स्वामी जी के पास पहुँचे यह सोचकर कि इनको हरा पाना कौन मुश्किल काम है। परन्तु थोड़ी देर में उन्हें ज्ञात हुआ कि यह संन्यासी कुछ और ही है। थोड़ी देर में उनका अहंकार तिरोहित हो गया और उनके अन्तस में जैसे सत्य का प्रकाश हो गया। यही वह क्षण था कि उन्होंने कुविचार और कदाचार से पूर्णतः विदा ले ली और पूर्ण ईश्वर विश्वासी बन गए। उनका जीवन पूर्णतः परिवर्तित हो गया। यहाँ तक कि जो व्यक्ति रिश्वत के अवसर को हाथ से जाने न देता था, पैसे के लिए अपने आचरण की मर्यादाओं को ध्यान में नहीं रखता था, उन्हीं की जमीन का एक मुसलमान से मुकदमा चल रहा था। उन्होंने स्वामी जी से कहा कि मुझे क्या करना चाहिए? स्वामी जी ने कहा कि सत्य बोलना चाहिए। माधव बाबू को पता था कि सत्य अगर उन्होंने बोला तो वह मुक़दमा हारे जाएँगे परन्तु परिवर्तन देखिए उन्होंने सत्य बोला और मुकदमा हार गए परन्तु आज मुकदमा हारने से भी दुखी नहीं थे, प्रसन्न थे। उन्होंने स्वयं कहा 'जब मुकदमा हारकर मैं कचहरी से बाहर आया और इक्के पर घर लौटा तो जिस निर्मल आनन्द का भोग मैंने किया वैसा कभी मुकदमा जीतने पर भी पहले कभी नहीं किया। मांस और मदिरा पीने को ही सेव्य समझने वाले और अनैतिक जीवन जीने वाले माधव बाबू के जीवन का पूर्णतया कायाकल्प हो गया।

जैसा कि सभी जानते हैं महर्षि दयानन्द ने जनता के उपकार के लिए अपने मोक्ष की चिन्ता छोड़ दी और सत्य उपदेश के माध्यम से लोगों में जागृति पैदा करने हेतु निकल पड़े थे। बहुत से लोग ऐसा सोचते हैं कि जब जीवन मिला है तो निवृत्ति मार्ग श्रेष्ठ है पर यह संतुलित विचार नहीं है क्योंकि स्वामी जी का उनको यह कहना था कि जो श्रेष्ठ कर्म हैं उनसे मुँह मोड़ना कदापि उचित नहीं है। स्वामी जी का कहना था क्रियात्मक जीवन ही जीवन है। वेद विहित शुभ कर्मों का करना ही निवृत्ति मार्ग है। वही मनुष्य जीवित कहलाने के अधिकारी हैं जो अपने जीवन को लोकहित के कार्यों में लगाता है।

प्रस्तुति- नवनीत आर्य
नवलखा महल, उदयपुर

समाचार

वैदिक विद्या केन्द्र का भव्य लोकार्पण

वैदिक विद्या केन्द्र के नाम से दक्षिण भारत के पुडुचेरी (पूर्व पॉन्डिचेरी) में एक अलौकिक प्रकल्प का निर्माण किया गया है। इसका लोकार्पण १४-१५ सितम्बर से प्रारम्भ होते हुए एक वर्ष तक उत्सव के रूप में मनाने की योजना है।

आर्य समाज चेन्नई १०० वर्षों से अधिक समय से कार्य कर रहा है। इसके अन्तर्गत धार्मिक, सांस्कृतिक और अध्यात्म आदि क्षेत्रों का कार्य उल्लेखनीय है। शिक्षा के क्षेत्र में ३० से अधिक DAV विद्यालय संचालित हैं, जिनमें ४५००० से अधिक छात्र अध्ययनरत हैं। भारतीय ज्ञानाश्रित मूल्यों से युक्त व्यक्ति निर्माण के कार्यों को व्यवस्थित और विस्तारित रूप देने हेतु 'वैदिक विद्या केन्द्र, पुडुचेरी' का निर्माण किया गया है। इस प्रकल्प के अन्तर्गत निम्न योजनाएँ हैं-

१. वैदिक गुरुकुल- भारत की प्राचीन आर्ष विद्या एवं आधुनिक विद्या के साथ शिक्षण।
२. व्यक्ति निर्माण- संस्कार युक्त आत्मनिर्भर युवक-युवती निर्माण एवं व्यक्ति निर्माण के शिविर।
३. साधक आश्रम- साधक प्रशिक्षण एवं ध्यान योग शिविरों का आयोजन।
४. वैदिक अनुसन्धान प्राचीन विद्या का आधुनिक परिप्रेक्ष्य में अनुसन्धान एवं प्रचार।

इस संस्था की स्थापना पूरे आर्य जगत् एवं राष्ट्रभक्तों के लिए गौरव की बात है। 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के लिए यह एक ऐतिहासिक कदम भी है जिसके दूरगामी सकारात्मक परिणाम देखने को मिलेंगे। इस केन्द्र के द्वारा दक्षिण भारत में तो निश्चित ही, पूरे भारत और विश्व भर में भी प्रचार के नए आयाम खुलेंगे, ऐसा हमारा विश्वास है।

आपने आर्य जगत् में अपना विशिष्ट स्थान बनाया है और अपने जीवन और संसाधन को वैदिक प्रचार-प्रसार में लगाया है। आपके पत्रिका के माध्यम से वैदिक विषयों एवं कार्यकर्मों का प्रसार निरन्तर हो रहा है। पत्रिका का नियमित सम्पादन करना श्रम एवं दायित्व का कार्य है। इस लिए हम आपका सम्मान करते हैं। - पीयूष आर्य

महामहिम उपराष्ट्रपति ने किया आचार्य अग्निव्रत के वेदार्थ-विज्ञानम् ग्रन्थ का विमोचन

श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास, भागलभीम, भीनमाल के संस्थापक प्रमुख एवं वैदिक वैज्ञानिक आचार्य अग्निव्रत ने वेदों को समझाने के लिए महान् ऋषियों द्वारा लिखे गए ग्रन्थों में से एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ निरुक्त का वैज्ञानिक भाष्य किया है। इस ग्रन्थ में लगभग ७०० मन्त्र

उद्धृत हुए हैं, जिनका आपने वैज्ञानिक भाष्य तो किया ही है, अनेक विवादित वा कठिन मन्त्रों का तीन प्रकार का भाष्य किया है। यह जानकारी वैदिक एवं आधुनिक भौतिकी शोध संस्थान, भीनमाल के प्राचार्य विशाल आर्य ने दी।

लेखक के अनुसार इस ग्रन्थ में तारों की संरचना एवं उनमें होने वाली विभिन्न क्रियाओं के ऐसे विज्ञान का वर्णन किया गया है, जिसके बारे में विश्व के वैज्ञानिकों को जानकारी नहीं है। वैदिक पदों के वैज्ञानिक रहस्यों के उद्घाटन में यह ग्रन्थ मील का पत्थर साबित होगा। वेदार्थ-विज्ञानम् ग्रन्थ विमोचन भारत के महामहिम उपराष्ट्रपति महोदय ने १४ अक्टूबर २०२४ को उपराष्ट्रपति भवन में किया। इस अवसर पर महामहिम ने कहा कि यह ज्ञान कितना आवश्यक है, यह ज्ञान कितना महत्वपूर्ण है और भारत जो आबादी में दुनिया का एक छठा है, ज्ञान में कहीं ज्यादा है। हमारी सांस्कृतिक विरासत, हमारी संस्कृति का ज्ञान, हमें दुनिया में अभूतपूर्व स्थान देता है और अच्छा विषय यह है कि वर्तमान में दुनिया भारत की पहचान को पहचानने लगी है।

इन ग्रन्थों से क्या सिद्ध होता है? एक कि वेद ब्रह्माण्डीय ग्रन्थ है। हमारे वैदिक भाषा, ब्रह्माण्ड की भाषा है। वेद मन्त्र परमात्मा द्वारा इस ब्रह्माण्ड में हो रहा वैज्ञानिक संगीत है। यह इस पुस्तक में लिखा है। यह मेरे विचार नहीं है, मैं तो सहमति व्यक्त करके बता रहा हूँ। मैं इस ग्रन्थ के लेखक एवं प्राचीन वैदिक ग्रन्थों के वैज्ञानिक भाष्यकार श्री आचार्य अग्निव्रत के इस प्रयास के लिए, आपको बहुत शुभकामनाएँ देता हूँ।

इस अवसर पर उपराष्ट्रपति की धर्मपत्नी श्रीमती सुदेश धनखड, डॉ. सत्यपाल सिंह, पूर्व मन्त्री-भारत सरकार, ग्रन्थ के लेखक आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक, सम्पादक डॉ. मधुलिका आर्या व विशाल आर्य, आर्य समाज के अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष सुरेश चन्द्र आर्य, राजस्थान के पूर्व लोकायुक्त जस्टिस सज्जन सिंह कोठारी, डी.आर.डी.ओ. के पूर्व निदेशक डॉ. रामगोपाल, पूर्व आई.ए.एस., आई.पी.एस., आई.आर.एस. अधिकारी डी.डी.ए. की डायरेक्टर डॉ. अल्का आर्या, अनेक वैज्ञानिक, प्रबुद्धजन उपस्थित थे। - विशाल आर्य (प्राचार्य)

शोक सन्देश

पद्म विभूषण श्री रतन जी टाटा के देहावसान से सम्पूर्ण राष्ट्र शोकमग्न है। भारत के शीर्षस्थ उद्योगपति होने के साथ-साथ वे एक सच्चे राष्ट्रभक्त भी थे। देश के औद्योगिक तथा आर्थिक विकास में टाटा समूह का उल्लेखनीय योगदान रहा है। श्री रतन जी टाटा के व्यावसायिक कुशलता एवं जीवनशैली उद्योग जगत् की सम्पूर्ण युवा पीढ़ी के लिए एक आदर्श प्रेरणा स्रोत रहेगी।

अत्यन्त सरल तथा सादा जीवन के धनी श्री रतन जी टाटा को विनम्र श्रद्धांजलि। -सुरेश चन्द्र आर्य- प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं संरक्षक श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास

महर्षि दयानन्द सरस्वती समृति भवन न्यास त्रैवार्षिक निवार्चन सम्पन्न

न्यास के आगामी तीन वर्ष हेतु कार्यकारिणी व पदाधिकारियों का निर्वाचन सर्वसम्मति से निम्नानुसार सम्पन्न हुए। कार्यकारी प्रधान- श्री विजय सिंह भाटी, मंत्री- आर्य किशन लाल गहलोत, कोषाध्यक्ष- श्री जय सिंह गहलोत।

हलचल

प्रेरक व्यक्तित्व

यह पहला अवसर है जब किसी उच्च पद पर आसीन व्यक्ति को अपने पूरे परिवार एवं स्टाफ (कर्मचारियों) के साथ अपने निवास पर वैदिक यज्ञ का आयोजन करना और बिना किसी अहंकार के साथ सबके साथ सुन्दर व्यवहार करते हुए देखा है। गत २७ जुलाई २०२४ को मुझे उनके यहाँ श्रावणी यज्ञ करने का शुभ अवसर पर प्राप्त हुआ। किसी राष्ट्राध्यक्ष के यहाँ यज्ञ करने का मेरा यह पहला अवसर था। मुझे यह

सुनकर और भी अच्छा लगा कि वे प्रतिदिन अपने निवास पर पूरे परिवार के साथ दैनिक यज्ञ करते हैं। मैं बात कर रहा हूँ मॉरीशस के माननीय राष्ट्रपति श्री पृथ्वीराज सिंह रूपन जी की। जो अपने निवास पर इस तरह के आयोजन करते रहते हैं। माननीय राष्ट्रपति जी एवं उनके पूरे परिवार ने पूरी श्रद्धा के साथ यज्ञ को सम्पन्न किया। यज्ञ के उपरान्त मेरा उपदेश भी हुआ। सभी उच्च पदों पर आसीन महानुभाव मॉरीशस के माननीय राष्ट्रपति जी का अनुकरण करने लगे तो सामान्य जनों को भी प्रेरणा मिलेगी। - जितेन्द्र पुरुषार्थी; गुरुकुल गौतम नगर, नई दिल्ली

चार दिवसीय ऋषि स्मृति सम्मेलन ध्वजारोहण के साथ सम्पन्न

महर्षि दयानन्द के अनुपम क्षमादान की स्मृति में मनाए जाने वाले ऋषि स्मृति सम्मेलन का भव्य समापन दिनांक १ अक्टूबर २०२४ को स्मृति भवन न्यास, जोधपुर में सम्पन्न हुआ। अथर्ववेद अंश परायण यज्ञ की पूर्णाहुति में सैंकड़ों आर्यजन सम्मिलित हुए। समापन समारोह में आर्य प्रतिनिधि सभा छत्तीसगढ़ के प्रधान डॉ. राजकुमार पटेल, राजस्थान के मंत्री जीववर्धन शास्त्री, स्वामी ओमानन्द सरस्वती, स्वामी चेतनानन्द सरस्वती, आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी, राजेश आर्य अमर प्रेमी, परोपकारिणी सभा के प्रधान ओम मुनि, न्यास के प्रधान विजय सिंह भाटी, पूर्व लोकायुक्त सज्जन सिंह कोठारी, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान किशन लाल गहलोत तथा कोषाध्यक्ष जयसिंह गहलोत ने आर्यों को सम्बोधित किया।

वेदार्थ विज्ञान संगोष्ठी

श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास भागल भीम द्वारा दिनांक ६ से ११ नवम्बर तक वेदार्थ विज्ञान संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें वेद से सम्बन्धित प्रत्येक प्रश्न, प्रत्येक शंका और प्रत्येक उलझे हुए स्थल का वैदिक वैज्ञानिक आचार्य श्रीमद् अग्निव्रत नैष्ठिक द्वारा समाधान किया जाएगा। ज्ञातव्य है कि आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक वेद के एक ऐसे विद्वान् हैं जिन्होंने ऐतरेय ब्राह्मण का वैज्ञानिक भाष्य करके विश्वभर के वैज्ञानिकों के सामने वेद के विज्ञान को उपस्थित किया है। उनका दावा है कि संसार का विज्ञान अभी वेद विज्ञान से बहुत पीछे है और संसार के वैज्ञानिक यदि इस तरफ गति करें तो बहुत कुछ सीख सकते हैं। साथ ही आचार्य जी ने अभी निरुक्त का भी भाष्य किया है जिसका भारतवर्ष के उपराष्ट्रपति माननीय जगदीप जी धनखड़ द्वारा विमोचन किया गया। सुधी पाठक, वेदप्रेमी जन आमंत्रित हैं इस वेदार्थ विज्ञान संगोष्ठी में। कृपया आयोजकों को अपने आगमन की सूचना अवश्य दें।

इसी अवसर पर आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान्, लेखक, सम्पादक, वक्ता आचार्य प्रेमभिक्षु जी; मथुरा के जन्म शताब्दी वर्ष पर भी एक सत्र का आयोजन होगा।

निवेदक- अग्नियश आर्य; प्राचार्य
स्थान : श्री विजय पताका महातीर्थ, सिरोही

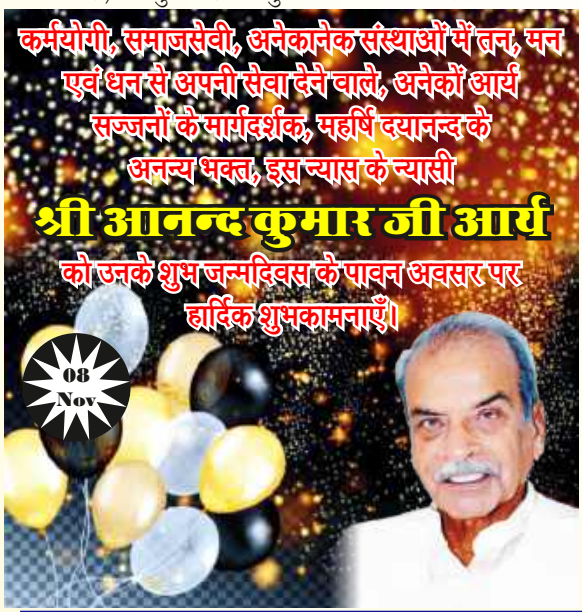

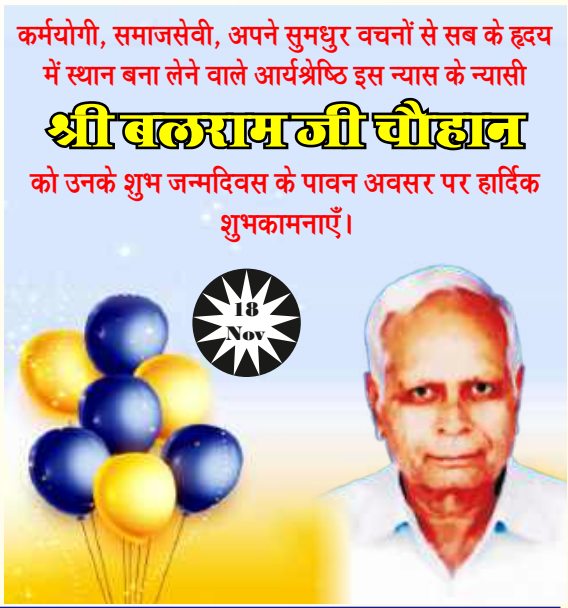

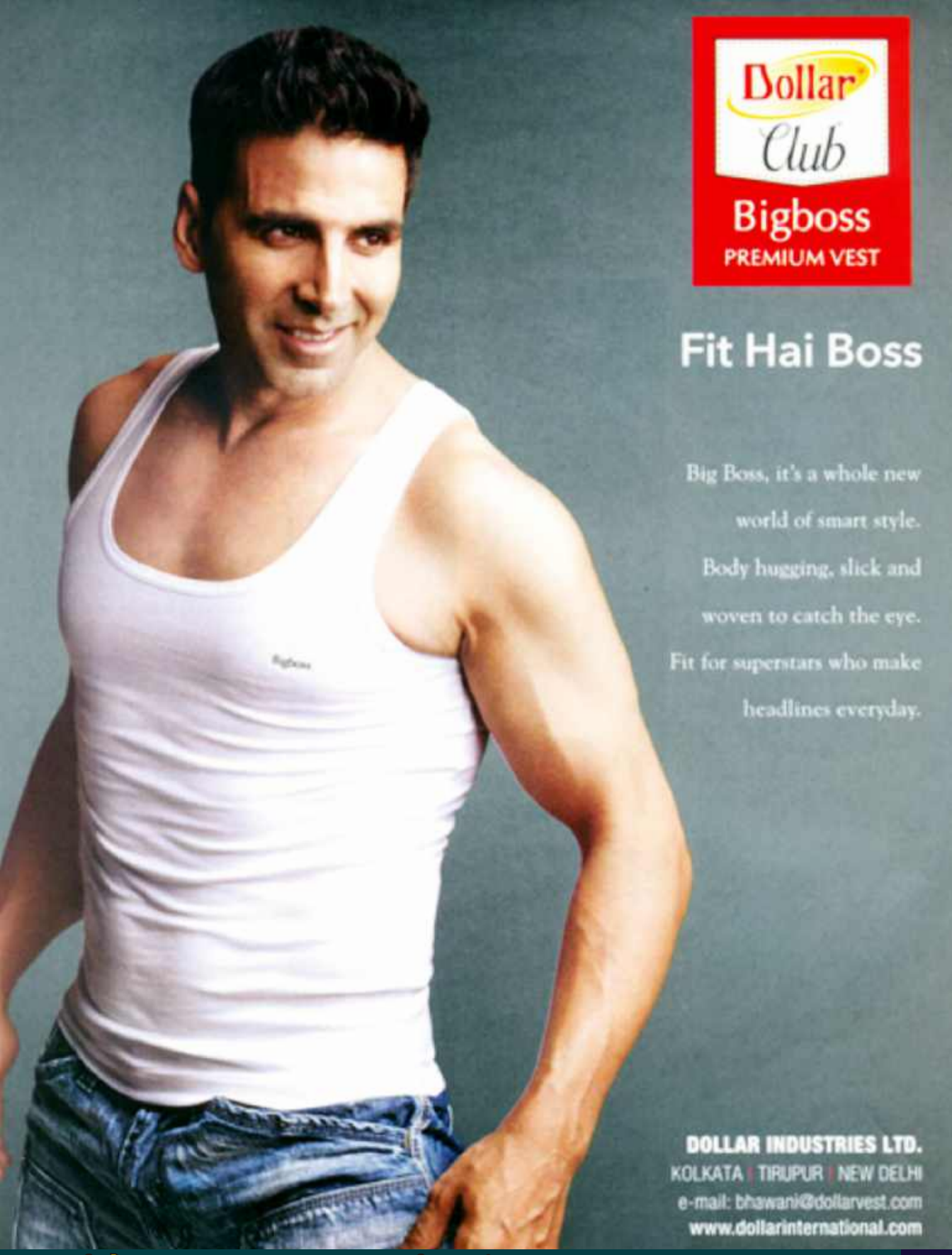
Dollar
Club
Bigboss
PREMIUM VEST
Fit Hai Boss
Big Boss, it's a whole new world of smart style. Body hugging, slick and woven to catch the eye. Fit for superstars who make headlines everyday.
DOLLAR INDUSTRIES LTD.
KOLKATA | TIRUPUR | NEW DELHI
e-mail: bhawani@dollarvest.com
www.dollarinternational.com

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 November-2024 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2021-2023

सत्य के जय और असत्य के क्षय के अर्थ मित्रता से वाद वा लेख करना हमारी मनुष्य जाति का मुख्य काम है। यदि ऐसा न हो तो मनुष्यों की उन्नति कभी न हो।

- सत्यार्थप्रकाश द्वितीय समुल्लास
अनुभूमिका पृष्ठ- ३९५

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा निदेशक- मुकेश चौधरी, चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर